वैशाख शुक्ल पक्ष षष्ठी संवत् 2082 | dopaharmetro | epaper.dopaharmetro.com | dopaharmetro | वर्ष-08, अंक - 305 | पेज 8, मूल्य 2 रुपए

डाक पंजीयन क्रमांकः म.प्र./4-474/2024-26

भोपाल
03 मई 2025 शनिवार

आज का मौसम
38 अधिकतम
26 न्यूनतम

बेबाक खबर हर दोपहर

दोपहर मेट्रो

Page-7

मुलाकात... संवाद

भोपाल। मुख्यमंत्री मोहन यादव से आज पुष्टिमार्गीय प्रधान पीठ श्रीनाथजी मंदिर नाथद्वारा के गोस्वामी तिलकायत चिरंजीवी 105 विशाल बाबा साहब ने मुख्यमंत्री निवास में सौजन्य भेंट की।

पहले डायरेक्ट ट्रेड बंद किया, अब इनडायरेक्ट ट्रेड भी बंद

अब पाकिस्तान से आयात बैन आर्डिनेंस फैक्ट्री में छुट्टियां रद्द

नई दिल्ली, एजेंसी।

भारत का पाकिस्तान के प्रति कठोर रवैया बरकरार है। अब भारत ने पाकिस्तान से आने वाले सभी सामानों के आयात (इंपोर्ट) पर रोक लगा दी है। सरकार ने इस संबंध में आज नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। इसमें कहा गया कि इस बैन से किसी को छूट चाहिए तो सरकार से परमिशन लेनी होगी। पहले डायरेक्ट ट्रेड बंद किया गया था, लेकिन अब इनडायरेक्ट ट्रेड भी बंद कर दिया गया है। अब भारत का वाणिज्य मंत्रालय उन उत्पादों की सूची तैयार कर रहा है, जिन्हें भारत से आयात-निर्यात नहीं किया जाएगा। नोटिफिकेशन में विदेश व्यापार नीति के तहत एक प्रावधान जोड़ा गया है। जिसमें कहा गया है कि अगले आदेश तक तत्काल प्रभाव से पाकिस्तान से आने वाले या निर्यात किए जाने वाले सभी सामानों के डायरेक्ट या इनडायरेक्ट आयात पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है। उधर मध्य प्रदेश के जबलपुर और महाराष्ट्र के चंद्रपुर की ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। मैनेजमेंट ने कर्मचारियों से कहा कि यह मुश्किल वक्त है, राष्ट्रीय सुरक्षा को देखते हुए काम नहीं रुकना चाहिए। यह फैक्ट्रियां हथियारों के लिये गोला बारुध आदि तैयार करती हैं। उल्लेखनीय है कि पहलगाम की बायसरन घाटी में 22 अप्रैल को आतंकियों की गोलीबारी में 26 टूरिस्ट की मौत हो गई थी। इसके बाद से भारत-पाक के बीच तनाव की स्थिति है। इसके बाद मोदी कह चुके हैं कि सेना को एक्शन लेने की खुली छूट है।

एलओसी पर गोलीबारी, बंकर में बच्चे

जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में सीमा पर फायरिंग के बीच सरकारी मिडिल स्कूल के बच्चों ने बंकर में शरण ली।

पाकिस्तानी मंत्री तरार का सोशल मीडिया अकाउंट भारत ने किया ब्लॉक

■ **उधर पाकिस्तान की बौखलाहट बढ़ती जा रही है। वहां के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भारत पर हमला करने की धमकी दी है। ख्वाजा ने कहा कि भारत यदि सिंधु समझौते का उल्लंघन कर सिंधु नदी पर बांध जैसा कोई निर्माण करता है तो पाकिस्तान भारत पर हमला करेगा। वहीं बांग्लादेश की ओर से विवादित बयान सामने आया है। अंतरिम सरकार के मुखिया मुहम्मद यूनुस के करीबी ने कहा- यदि भारत पाकिस्तान पर हमला करता है, तो ढाका को चीन के साथ मिलकर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों पर कब्जा कर लेना चाहिए। वहीं भारतीय सेना ने कहा है कि 2-3 मई की रात पाकिस्तानी सेना ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, उरी और अखनूर इलाकों में एलओसी के पार से फायरिंग की। पाकिस्तान की सेना ने लगातार 9वें दिन सीजफायर का उल्लंघन किया। भारत ने पाकिस्तान के सूचना एवं प्रसारण मंत्री अताउल्लाह तरार का अकाउंट भारत में ब्लॉक कर दिया है। तरार ने पाकिस्तान पर भारतीय हमले का दावा किया था। कल पीएम शहबाज शरीफ का ऑफिशियल यूट्यूब चैनल और इंस्टा अकाउंट भी ब्लॉक किया गया था। उधर गत दिवस पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से चीन के राजदूत जियांग जैडॉन्ग ने मुलाकात में भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव पर चर्चा की थी। चीनी राजदूत ने दोनों देशों से संयम बरतने और आपसी मतभेदों को बातचीत से सुलझाने की अपील है।**

मणिपुर हिंसा को दो साल पूरे होने पर बंद, कड़ी सुरक्षा

इंफाल, एजेंसी। मणिपुर में हिंसा भडके आज दो साल हो गए हैं। इस दौरान 250 से ज्यादा मौतें हुई हैं जबकि 50 हजार लोग आज भी विस्थापित हैं। जो 6 हजार एफआईआर दर्ज हुई, उनमें करीब 2500 में कार्रवाई आगे नहीं बढ़ी।

आज मैतेई संगठन कोऑर्डिनेट कमेटी ऑन मणिपुर इंटीग्रिटी ने लोगों ने सभी गतिविधियां बंद रखने और अपने कन्वेंशन में शामिल होने के लिए कहा है। वहीं, कुकी स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन और जोमी स्टूडेंट्स फेडरेशन ने भी कुकी आबादी वाले इलाकों में बंद बुलाया है। कुकी समुदाय आज के दिन को डे ऑफ आइसोलेशन के रूप में मना रहा है। इधर, राज्य में तनाव को देखते हुए सुरक्षाबलों ने इम्फाल, चुराचांदपुर और कंगपोकपी में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की है।

किसानों-निवेशकों के बीच पहुंचे मुख्यमंत्री यादव

भोपाल, दोपहर मेट्रो। मुख्यमंत्री मोहन यादव आज कृषि नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के उदेश्य से मंदसौर में आयोजित राज्य स्तरीय कृषक सम्मेलन एवं कृषि उद्योग समागम में किसानों के बीच हैं। -2025 का शुभारंभ करेंगे. इस मौके पर डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा, कृषि मंत्री एदल सिंह कंषाना, उद्यानिकी मंत्री नारायण सिंह कुशवाह समेत उद्यमी, निर्यातक एवं एफपीओ प्रतिनिधि बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यादव खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में कार्य करने के लिये इच्छुक निवेशकों के साथ संवाद भी करेंगे, जिससे नये निवेशक मंदसौर जिले में निवेश के लिये आकर्षित होंगे और उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम में आधुनिक कृषि यंत्रों, नवीनतम बीजों, संरक्षित खेती, प्राकृतिक कृषि, मत्स्य पालन, खाद्य प्र-संस्करण एवं जैविक उत्पादों का प्रदर्शन किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव समागम में आये अतिथि निवेशकों के साथ संवाद करेंगे और राज्य सरकार की योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ वितरण करेंगे।

प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर दी शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री यादव ने आज विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर कलमकारों को शुभकामनाएं दी है। उन्होंने पोस्ट किया कि लोकतंत्र, एकता व प्रगति के लिए ऐसी पत्रकारिता आवश्यक है जो सतर्क होने के साथ प्रत्येक मायने में स्वतंत्र भी हो।

बेटा कर रहा था पिता की तलाश, उसे जंगल में खा रहा था बाघ

बालाघाट, दोपहर मेट्रो। अपने खेत में बनी झोपडी में बैठे किसानो को आज सुबह करीब पांच बजे एक बाघ ने अपना शिकार बना लिया। इस घटना के बाद से किसानों और पूरे गांव में दहशत है। घटना वन परिक्षेत्र कटंगी के गोरेघाट सर्किल की बताई जा रही है। खबरों के अनुसार, गांव गोरेघाट जंगल से लगा है। इस गांव के किसानों ने खेतों में रबी की फसल लगाई है। फसल को खाने जंगली सूअर रोजाना खेत में आ जाते हैं। इस वजह से किसान उन्हें भागने के लिए फटाखे फोड़ते है। किसान प्रकाश (58 वर्ष) ने रात तीन बजे जंगली सूअर को भागने के लिए पटाखे फोड़े और खेत की झोपड़ी में जाकर बैठ गया। सुबह होने पर वो घर नहीं पहुंचा, तो उसका पुत्र खेत में झोपडी तरफ जाकर देखा, लेकिन नहीं दिखाई दिया। आवाज लगाई, पर पता नहीं चलने पर झोपडी के आगे एक स्थान पर बाघ उसके पिता को खाते दिखा। बाघ को देख वो उल्टे पर गांव में लौट आया और परिजन सहित आसपास में जानकारी दी।तभी सभी लोग मौके पर गए और बाघ को भगाने के लिए शोर मचाने लगे। बाघ ने किसान के शरीर के आधे पैर को खा लिया। जिसकी सूचना वन विभाग को दी गई, लेकिन वन विभाग तत्काल नहीं पहुंच पाया।

अब पोप के अवतार में ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपनी नई एआई जनरेटेड फोटो शेयर की है। इसमें वे पोप के कपड़े पहने दिख रहे हैं। इस पोस्ट को कुछ सोशल मीडिया यूजर्स मजेदार बता रहे हैं, तो कुछ इसे पोप के अपमान की तरह देख रहे हैं। ट्रम्प 26 अप्रैल को पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार में शामिल होने वेटिकन पहुंचे थे। 30 अप्रैल को उनसे एक पत्रकार ने सवाल किया कि वे अगले पोप के तौर पर किसे देखना चाहेंगे, तो उन्होंने अपना नाम लिया था। उन्होंने कहा कि मैं पोप बनना चाहूंगा।

यूएन की जज को सात साल जेल की सजा

नई दिल्ली, एजेंसी। यूनाइटिड नेशंस की एक जज को एक महिला से गुलाम की तरह जबरन काम करवाने के मामले में 6 साल 4 महीने की जेल की सजा सुनाई गई है। खबरो के मुताबिक 50 वर्षीय लीडिया मुगांबे कानून में पीएचडी करने के लिए ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में थीं। उनके घर से पुलिस को युगांडा की युवती मिली जो बिना किसी सैलरी के नौकरानी और आया का काम कर रही थी। मुगांबे युगांडा में हाई कोर्ट की जज भी हैं। उन्हें ऑक्सफोर्ड क्राउन कोर्ट ने मार्च में मॉडर्न डे स्लेवरी (आधुनिक दासता) के अपराध में दोषी ठहराया था। इस मामले में अब सजा सुनाई गई। सुनवाई के दौरान जज डेविड फॉक्सटन ने कहा कि मुगांबे ने अपने किए पर कोई पछतावा नहीं जताया और उन्होंने पूरी तरह पीड़िता को ही दोष देने की कोशिश की।

गोवा में हादसा, पीएम ने ली जानकारी

प्रबंधन नाकाम : धार्मिक यात्रा में भगदड़ से 7 की मौत, कई श्रध्दालु गंभीर रूप से घायल

पणजी, एजेंसी।

गोवा के शिरगांव में श्रीलैराई जात्रा (यात्रा) के दौरान आधी रात के बाद मची भगदड़ में 7 लोगों की मौत हो गई। हादसे में 40 से ज्यादा लोग घायल हैं, जिनमें 20 गंभीर हैं। राहत-बचाव कार्य जारी है। आशंका है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। इस मामले को लेकर आज सुबह पीएम मोदी ने गोवा के सीएम से फोन पर बात की। बताया जाता है कि बड़ी संख्या में श्रद्धालु जात्रा में शामिल होने मंदिर की ओर जा रहे थे। इसी दौरान एक दुकान के सामने बिजली के तार से करंट लगने के बाद कुछ लोग गिर गए। तभी अफरातफरी हुई और भगदड़ मच गई। क्राउड मैनेजमेंट के पर्याप्त इंतजाम नहीं होने की वजह से हादसा हुआ। श्रीलैराई जात्रा नॉर्थ गोवा के बिचोलिम तालुका के शिरगांव गांव में आयोजित होने वाला हिंदू धार्मिक उत्सव है। यह अप्रैल या मई में होती है। इसमें गोवा, महाराष्ट्र, और कर्नाटक से हजारों श्रद्धालु आते हैं। जात्रा 2 मई की शाम से 3 मई की सुबह तक आयोजित की गई थी। इसी दौरान हादसा हुआ। पुलिस के मुताबिक- महाराष्ट्र, कर्नाटक सहित कई राज्यों के 30 से 40 हजार लोग यात्रा में शामिल होने पहुंचे थे।

तपन के बीच लोगों को बौछारों का इंतजार

मप्र के 40 जिलों में मौसम बिगड़ने व आंधी-पानी की आशंका

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मौसम का बिगड़ा मिजाज आज भोपाल ग्वालियर, जबलपुर समेत करीब 40 जिलों में शनिवार को बारिश-आंधी ला सकता है। भोपाल में सुबह से बादल हैं और लोग भी बारिश की बौछारों का इंतजार कर रहे हैं। किसानों को भी मिट्टी में नमी के लिये एक बारिश काइंतजार है। आज 7 जिले- सतना, मैहर, कटनी, उमरिया, शहडोल, डिंडौरी और अनूपपुर में ओले भी गिर सकते हैं। मौसम विभाग के अनुसार 6 मई तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा। वहीं भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, श्योपुर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, नीमच, मंदसौर, आगर-मालवा, राजगढ़, शाजापुर, विदिशा, रायसेन, सागर, नर्मदापुरम, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सिवनी, मंडला, बालाघाट, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में बारिश का अलर्ट है। वहीं उप्र सहित 19 राज्यों में आंधी-तूफान का अलर्ट है। राजस्थान में धूलभरी आंधी चल सकती है। वहीं, ओडिशा, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक में तेज बारिश हो सकती है।

मेट्रो एंकर

बुजुर्ग दंपति शारीरिक अशक्तता के चलते नहीं पहुंच पा रहे थे कोर्ट

कोर्ट रूम के बाहर सीढ़ियों पर जज ने सुना मुकदमा और तत्काल फैसला भी दिया !

हैदराबाद, एजेंसी।

एक जज की संवेदनशीलता ने लोगों का दिल जीत लिया है। यह मामला तेलंगाना के निजामाबाद की कोर्ट का है। इसमें अतिरिक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट (जेएफसीएम) फर्स्ट क्लास ई साई शिवा ने कोर्ट रूम से प्रोटोकॉल से हटकर सुनवाई की। जज ने कोर्ट रूम से बाहर ऑटो रिक्शा के पास आकर मामले की सुनवाई की और फिर बुजुर्ग दंपती के खिलाफ दायर किए केस को खारिज कर दिया। वे निजामाबाद जिला कोर्ट में पदस्थ हैं और वे दहेज के एक मामले की सुनवाई कर रहे थे, जब उन्हें पता चला कि इस मामले में आरोपी दंपती बुजुर्ग और कमजोर हैं तो वह कोर्ट रूम से खुद बाहर आए और उन्होंने कोर्ट की सीढ़ियों पर खड़े होकर बुजुर्ग दंपती का बयान लिया। जज ने वहीं पर उनकी आर्थिक स्थिति का आकलन किया और इस केस को खारिज कर दिया। इस केस के बाद अब सोशल मीडिया पर ई साई शिवा की तस्वीर वायरल हो रही है। इसमें वह जज की ड्रेस में हैं और बुजुर्ग महिला से कुछ पूछ रहे हैं। जज ई साई शिवा के व्यक्तिगत तौर पर बुजुर्ग दंपति से मिलने और मार्मिक कदम उठाने को खूब सराहा जा रहा है। निजामाबाद के बोधन में दहेज का यह मामला रुद्रुर मंडल के रेकुर गांव से जुड़ा है। यहां के निवासी सायम्मा और गंगाराम अपनी बहू द्वारा दायर एक मामले के संबंध में नियमित रूप से कोर्ट की सुनवाई में भाग ले रहे थे। वह दोनों वृद्धावस्था के बावजूद कानूनी प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

हर कोई कर रहा तारीफ

■ बताया जाता है कि ये बुजुर्ग दंपति ऑटो-रिक्शा में कोर्ट परिसर पहुंचे, लेकिन शारीरिक कमजोरी के कारण वे कोर्ट रूम तक पैदल नहीं जा पा रहे थे। उनकी उपस्थिति और स्थिति के बारे में जब जेएफसीएम मजिस्ट्रेट ई साई शिवा को जानकारी दी गई तो वह कुर्सी से नीचे उतरे और व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने के लिए बाहर आ गए। मजिस्ट्रेट ने मौके पर ही मामले के विवरण की जांच की। दोनों पक्षों को सुनने और परिस्थितियों का आकलन करने के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि बुजुर्ग दंपति की कोई गलती नहीं थी। इसके बाद उन्होंने मामले को खारिज कर दिया। जज द्वारा उठाए गए कदम की खूब तारीफ हो रही है। एक्स पर एक यूजर ने लिखा है अदालत कक्ष तक पहुंचने में असमर्थ एक बुजुर्ग दंपति के मामले को सुनने के लिए जज का बाहर आना सचमुच प्रशंसनीय और प्रेरक है।

जरूरत के वक्त सूखे प्याऊ.....

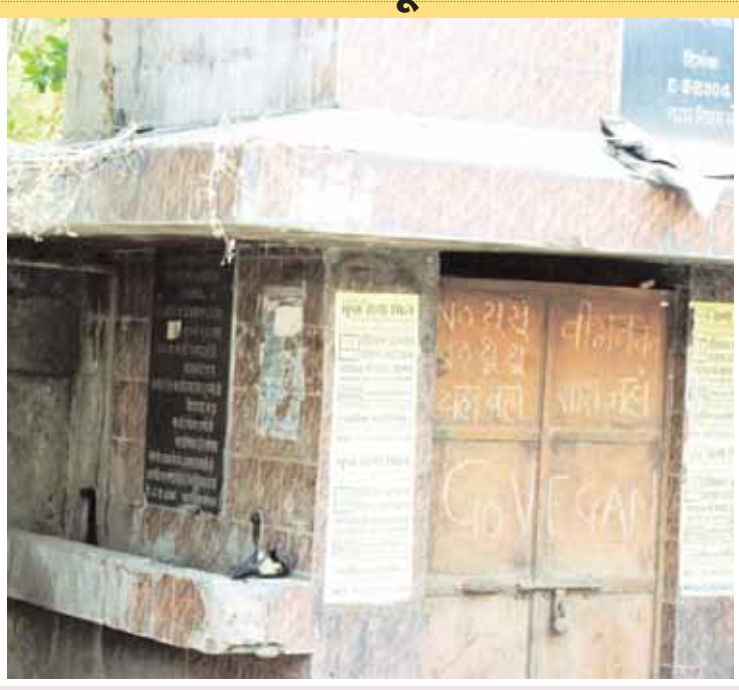

भोपाल। राजधानी में पड रही तेज धूप व गर्मी के बीच शहर में दर्जनों स्थान पर बने सार्वजनिक प्याऊ बंद पडे हैं। इनकी हालत बयां करते चित्र।

सीएम ने सुनी लोगों की समस्या और माना कि ऊपरी स्तर तक शिकायतें आना गंभीर

शिकायतें, समाधान ऑनलाइन तक पहुंचने पर भड़के सीएम, निचले स्तर पर क्यों हल नहीं हो रहीं..

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

समाधान ऑनलाइन में लोगों से वर्चुअली बातचीत करने के बाद सीएम डॉ. मोहन यादव ने अधिकारियों से कहा कि शिकायतों का समाधान ऑनलाइन तक पहुंचना ही गंभीर है। जिन शिकायतों का निचले स्तर पर हल होना चाहिए या शिकायत का अवसर ही नहीं देना चाहिए, वे शिकायतें यहां तक पहुंच रही है। ऐसा नहीं चलेगा, काम में सुधार लाएं और लोगों का कल्याण करें।

यह भी कहा कि योजनाओं के डिलेवरी सिस्टम को और अधिक मजबूत बनाएं। नागरिकों के काम समय पर हों और उन्हें अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए यहां-वहां भटकना न पड़े। बताया कि सभी योजनाओं में जिलों के प्रदर्शन की ग्रेडिंग कराई है। जिला एवं पुलिस प्रशासन के बारे में फीडबैक भी लिया जा रहा है। ग्रेडिंग में अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन न करने वाले जिलों के अधिकारी अपना प्रदर्शन सुधार लें और नागरिकों को बेहतर प्रशासन एवं व्यवस्थाओं को कस्टमर फ्रेंडली बनाकर उनका विश्वास हासिल करें।

सीएम ने पांढुर्णा, मुरैना, उमरिया, नीमच, भिंड, बैतूल, निवाड़ी, रायसेन, नर्मदापुरम एवं धार जिले के एक-एक मामले तथा शहडोल और सतना जिले के 2-2 मामलों (कुल 14 प्रकरणों) से जुड़े लोगों को वर्चुअली सुना। इन मामलों में जिलों के कलेक्टर व विभागाध्यक्षों ने संबंधितों के खिलाफ मामलों की समाधान ऑनलाइन में सुनवाई से पहले ही निलंबन, कारण बताओ नोटिस, आर्थिक अपराध से जुड़े मामलों में एपआईआर व वेतन वृद्धि रोके जाने संबंधी कार्रवाई कर दी थी।

कलेक्टर, एसपी को कहा- लोग भटकने नहीं चाहिए, यह प्रशासन की जिम्मेदारी

सीएम की कलेक्टर-एसपी को सीख- दक्षता व क्षमता विकसित करें

सीए ने कलेक्टर, कमिश्नर, पुलिस आयुक्त, डीआईजी, एसपी से कहा कि आप लोगों को दक्षता व क्षमता संवर्धन पर और अधिक जोर देना चाहिए। प्रदेश में ऐसे कई उदाहरण है, जिसमें आप ही के साथियों ने दक्षता व क्षमता का अधिक से अधिक उपयोग कर आम जन के लिए कई काम आसान किए है, ऐसे उदाहरणों का अनुशरण सबको करना चाहिए, ताकि सरकार आम लोगों के दिलों को छू सकें।

तय समय पर पूरा हो काम

सीएम ने दो टूक कहा कि जिलों में चल रही केंद्र व राज्य की योजनाओं से जुड़े कामों की डेडलाइन पूर्व से तय है, उसी के दायरे में काम पूरे करें। देरी का असर सरकार पर ही नहीं, जनता पर भी पड़ता है इसलिए किसी भी स्थिति में देरी न हो, इसका ध्यान रखें। देरी करने वाले अफसरों से सवाल होंगे, कार्रवाई के दायरे में भी लिया जाएगा। उन्होंने किसानों को खेत जलाने से रोकने के लिए जागरुक करने और नहीं मानने पर कार्रवाई के दायरे में लिए जाने के निर्देश दिए।

एमसीयू में डिजिटल मीडिया एंड एआई पर हुआ इंटरेक्शन सेशन

पत्रकारिता में नेट -एआई का उपयोग सच की तह में जाने के लिए जरुरी

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के न्यू मीडिया टेक्नोलॉजी विभाग में डिजिटल मीडिया एंड एआई विषय पर इंडष्ट्री इंटरेक्शन सेशन का आयोजन किया गया। स्वामी विवेकानंद सभागार में आयोजित सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थियों का उद्देश्य सिर्फ नौकरी पाना नहीं होना चाहिए। बल्कि तकनीक के माध्यम जैसे कि इन्टरनेट एवं एआई का उपयोग करके सच की तह तक जाकर पत्रकारिता करना चाहिए। कुलगुरू तिवारी ने क्लास रूम एवं न्यूज़ रूम को जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। डिग्री सिर्फ मीडिया संस्थान में अंदर जाने के लिए गेट पास है। उन्होंने उत्तर एवं दक्षिण भारत में होने वाले प्रेस कांफ्रेंस में अंतर बताया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रुप में बिलाल भट्ट, समूह संपादक, ईटीवी भारत एवं जे. श्रीनिवास, सीईओ, ईटीवी भारत समूह विशेष रुप से उपस्थित थे। सत्र का संयोजन विभागाध्यक्ष एवं डीन प्रो. डॉ. पी. शशिकला द्वारा किया गया।

मीडिया में तकनीक का उपयोग बढ़ गया~ भट ने कहा कि मीडिया में तकनीक का उपयोग बढ़ गया है । उन्होंने जंक जर्नलिज्म एवं एआई का मीडिया में किस तरह से उपयोग हो रहा है इसके बारे में जानकारी। श्रीनिवास ने बताया कि प्रिंट, रेडियो एवं टीवी के माध्यम से एक तरफा संचार होता है, सिर्फ बनाने वाला निर्णय लेता है की क्या, कब, कैसे दिखाना है। मिस इनफार्मेशन एवं डिस इनफार्मेशन के बारे में भी उन्होंने बताया।

शासकीय विद्यालयों में 20 दिवसीय समर कैम्प का आयोजन

ग्रीष्मकालीन अवकाश में रचनात्मक गतिविधियों से जुड़े छात्र-छात्राएं

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

मध्यप्रदेश के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी इन दिनों कला एवं अभिव्यक्ति, नाट्य अभिनय, फोटोग्राफी, प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग, पारंपरिक नृत्य, क्षेत्रीय संगीत, हस्तकला एवं लोक कलाएँ, पारंपरिक खेलों, वित्तीय साक्षरता, व्यवसाय, मॉडल, डिज़ाइन, थिंकिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और टेक्नोलॉजी के साथ ही कविता और कहानियों की रचना जैसी अपनी अभिरूचियों के विकास में व्यस्त हैं। दरअसल प्रदेश के विभिन्न शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए समर कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय के अपर संचालक श्री राजीव तोमर ने बताया कि एक मई से प्रारंभ हुए ये समर कैम्प 20 मई 2025 तक संचालित होंगे। शासकीय विद्यालयों में अकादमिक गतिविधियों के साथ विद्यार्थियों में रचनात्मक-सृजनशीलता, कला-कौशल के विकास के लिए इन समर कैम्प्स का आयोजन प्रदेश के समस्त सांदीपनी विद्यालयों, पीएमश्री विद्यालयों, उत्कृष्ट विद्यालयों और मॉडल विद्यालयों के साथ 500 से अधिक नामांकन वाले एकीकृत हायर सेकेंडरी विद्यालयों में किया जा रहा है। समर कैम्प का उद्देश्य विद्यार्थियों में 21वीं सदी के विभिन्न कौशलों जैसे आपसी सहयोग, टीमवर्क, समस्या समाधान, आपसी सामंजस्य, तार्किकता और नेतृत्व जैसे जीवन कौशल विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करने के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक जागरूकता, डिजिटल और वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना तथा विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा बोलने की क्षमता का विकास आदि हैं।

समर कैम्प के आयोजन की अवधि

सांदीपनी विद्यालयों में समर कैम्प का आयोजन सामान्यत: एक मई से 20 मई 2025 की अवधि में प्रात: 8 से 11 बजे तक किया जा रहा है। वहीं पीएमश्री उत्कृष्ट एवं मॉडल विद्यालयों में विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा बोलने की क्षमता विकसित करने के लिये कक्षा-3 से 8 और कक्षा-9 से 12 के विद्यार्थियों के लिये समर कैम्प आयोजित किये जा रहे हैं।

आधा घंटे तक गुंडे-बदमाशों का सड़क पर आतंक, पुलिस कमिश्नर से जवाब तलब

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

मप्र मानव अधिकार आयोग ने भोपाल शहर के शाहपुरा इलाके में अज्ञात गुंडों-बदमाशों द्वारा जबरन रास्ता रोककर वाहनों में डंडे-पत्थर से तोड़फोड़ कर लोगों पर हमला करने के मामले में संज्ञान लिया है।?मामले में आयोग ने पुलिस कमिश्नर को जांच के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही की गई कार्यवाही का प्रतिवेदन भी मांगा है। आयोग के संज्ञान में आया है कि, शाहपुरा क्षेत्र में करीब आधा घंटे तक गुंडे-बदमाशों ने सड़क पर से गुजर रहे वाहनों को जबरन रोक कर वाहन में तोड़फोड़ कर लोगों पर जानलेवा हमला किया और मारपीट भी करने लगे। इसमें करीब दस से ज्यादा वाहनों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया और हमले में दो लोग घायल भी हुये है। हमले में घायल हुए लोगों ने अपनी जान बचाकर वहां से भागे। घटना के बाद घायलों ने संबंधित पुलिस स्टेशन में जाकर आरोपी बदमाशों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है।

दुर्घटनाओं वाले स्थानों की सूची भी होगी तैयार

पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा से जुड़ेंगी डायल-100 व 108

भोपाल, दोपहर मेट्रो

प्रदेश के उन स्थानों की सूची सरकार तैयार करेगी, जहां बार-बार दुर्घटनाएं होती है। इसके अलावा उन संभावित क्षेत्रों और उनके स्थानों की भी सूची तैयार की जाएगी, जहां दुर्घटनाएं होने की संभावना है। ये स्थानों व क्षेत्रों पर पहले से नजर रखी जाएगी और प्रयास किए जाएंगे कि किसी भी स्थिति में दुर्घटना न हो। यदि बचाव के सभी मापदंडों को पूरा करने के बावजूद भी होती है तो गंभीर घायलों को कम से कम समय में पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा उपलब्ध कराई जाएगी।

पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा को डायल-100 व एंबुलेंस सेवा 108 से जोड़ा जाएगा ताकि डायल-100 व 108 एंबुलेंस सेवा को जाने वाले कॉल में से गंभीर घटनाओं व घायलों से जुड़े कॉल की जानकारी पीएमश्री एयर एंबुलेंस प्रबंधन के पास भी कम से कम समय में पहुंच सके। ऐसा किसी भी दुर्घटनाओं में गंभीर घायलों को कम से कम समय में पीएमश्री एयर एंबुलेंस के जरिए लोगों को इलाज मुहैया कराने के मकसद से किया जा रहा है। सीएम मोहन यादव ने इस संबंध में अफसरों को इसके निर्देश दिए।

25 भाषाओं में पत्रकारिता की ताकत, चुनौतियों व बलिदानों का चित्रण

भोपाल। शहर की चित्रकार नवाब जहां बेगम ने 'वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे' पर एक कलाकृति तैयार की है, यह पत्रकारिता की ताकत, चुनौतियों और उससे जुड़े बलिदानों को सामने लाती है। यह 2×3 फीट की एक्रेलिक पेंटिंग वैश्विक पत्रकारिता को समर्पित एक प्रतीकात्मक श्रद्धांजलि भी है। इस अनूठी पेंटिंग में 'वर्ल्ड जर्नलिज्म' शब्द को अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, फ्रेंच, जापानी, कोरियन, अरबी, फारसी, रूसी, जर्मन, हिब्रू और वियतनाम जैसी 25 अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में लिखा गया है। हर भाषा के शब्दों में पत्रकारिता के संघर्ष और उसकी जिम्मेदारी का भाव छुपा है। यह कलाकृति इस बात को भी दर्शाती है कि पत्रकारिता की आज़ादी केवल एक देश की नहीं, बल्कि वैश्विक समाज की साझा विरासत है।

हलालपुर बस स्टैंड पर प्याऊ, शर्बत भी बंटेगा, पानी की सप्लाई करेगा जीव सेवा संस्थान

हिरदाराम नगर. दोपहर मेट्रो।

हलालपुर बस स्टैंड पर विजय नगर सिंधी उत्थान पंचायत द्वारा जीव सेवा संस्था के सहयोग से निःशुल्क पीने के पानी की प्याऊ का शुभारंभ किया गया, जिससे प्रतिदिन सैकड़ों यात्रियों को शीतल पेयजल उपलब्ध कराया जाएगा। पानी की नियमित आपूर्ति जीव सेवा संस्था द्वारा की जाएगी।

इस अवसर पर वीणा देवी आसवानी की स्मृति में प्रतिदिन यात्रियों को शरबत का वितरण भी किया जाएगा, जिससे गर्मी के मौसम में यात्रियों को राहत मिल सके। प्याऊ के शुभारंभ अवसर पर विजय नगर सिंधी उत्थान पंचायत के रमेश भंबानी, कैलाश शर्मा, हीरानंद गनवानी, अशोक टिलवानी, जय कृष्ण मुरझानी, कैलाश आसवानी तथा गुरमुखदास आहूजा प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

मेट्रो एंकर जेहादियों से सतर्क रहने की आवश्यकता -बग्गासंस्कार विद्यालय में समर कैम्प शुरू

लव जिहाद :सकल हिंदू समाज उतरा सड़कों पर

हिरदाराम नगर. दोपहर मेट्रो।

सकल हिंदू समाज ने संतनगर में लव जिहाद के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया। चंचल चौराहे पर लव जिहाद के खिलाफ सैकड़ो की संख्या में मातृशक्ति ने धरना प्रदर्शन कर अपना आक्रोश व्यक्त किया । कार्यक्रम संयोजक राम बंसल ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित हुई मध्य प्रदेश भाजपा की प्रवक्ता नेहा बग्गा जिन्होंने विस्तार से लव जिहाद के विषय पर उपस्थित बेटी बहन एवं मातृशक्ति से चर्चा की।

उन्हों ने कहा कि इस जंजाल से मुक्त होने के और इस प्रकार लव जिहाद जो धर्म के नाम पर नाम बदलकर एवं पहचान छुपाकर हैवानी मानसिकता से हिंदू बहन बेटियों को शिकार बना रहे है ऐसे लोगों से सावधान रहने की जरूरत है । उन्होंने कहा कि जब हम अपनी संस्कृति के साथ जुड़े रहेंगे हम अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे हम अपने माता-पिता को अपना आदर्श मानेंगे तब कहीं जाकर के हम इस लव जिहाद से मुक्ति पा सकते हैं क्योंकि जब हम पढ़ाई करने जाते हैं जब हम किसी एग्जाम की तैयारी करने के लिए बाहर रहते हैं या हम किसी अन्य ऑफिस या किसी अन्य कार्य से बाहर रहते हैं ऐसे में इस प्रकार की मानसिकता के जो जिहादी हैं यह लोग आपको अपने जाल में पहले प्रेम करके पहले आपकी मदद करके पहले आपको अपना बना करके प्रेम के जाल में फंसाएंगे। फिर आपका धीरे-धीरे शोषण शुरू करेंगे और जब आप इस जाल में इतने उलझ जाएंगे की फिर आपको केवल और केवल आत्महत्या और इस प्रकार का कर्म करने के अलावा कुछ नहीं दिखेगा इसलिए ऐसे जेहादियों से सतर्क रहने की आवश्यकता है ।

इस अवसर पर सकल हिंदू समाज की माता बहने भाई एवं शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे ।सभी ने एक स्वर में इन जेहादियों से सतर्क रहने एवं उनके विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई करने सरकार से अनुरोध किया । कार्यक्रम के पश्चात एसडीएम को एक ज्ञापन कलेक्टर के नाम पर प्रस्तुत किया ।

कृषि की ताकत, उद्योग का सहारा
बढ़ेगा किसान, बढ़ेगा देश हमारा

कृषि-उद्योग समागम 2025

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

द्वारा

3 मई, 2025 | दोपहर 12:00 बजे
कृषि उपज मंडी ग्राउंड
सीतामऊ, मंदसौर

कृषि उद्योग समागम - किसानों के हित में नई पहल

तकनीक को प्रोत्साहन
किसान भाई-बहन एक ही मंच पर कृषि, उद्यानिकी एवं पशुपालन के, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस युक्त आधुनिक यंत्रों एवं नवीनतम तकनीकों से परिचित होंगे

आधुनिक आदान को बढ़ावा
सिंचाई संयंत्र, बीजों की उन्नत एवं नवीनतम किस्मों तथा वैज्ञानिक रूप से विकसित फर्टिलाइजर्स की जानकारी से भी अवगत होंगे

कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण को नए आयाम
कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण की नवीनतम पद्धतियों, डेयरी टेक्नोलॉजी तथा मत्स्य पालन की आधुनिक तकनीकों की सटीक जानकारी एवं मार्गदर्शन

कृषि और उद्योग की साझेदारी
कृषि एवं उद्यानिकी फसल आधारित उद्योगों से जुड़े उद्यमी, किसान उत्पादक संगठन (FPO), क्रेता-विक्रेता, निर्यातक एवं किसान संगोष्ठी के माध्यम से तलाशेंगे साझेदारी के अवसर

किसान हित की योजनाओं में पंजीयन
फसल बीमा कंपनी, किसान क्रेडिट कार्ड एवं बैंकर्स द्वारा किसानों के साथ जानकारी साझा की जाएगी तथा किसान हित की योजनाओं में होगा किसानों का पंजीयन

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhypradesh @jansamparkMP JansamparkMP #कृषि_उद्योग_समागम_MP

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

D1102/25

प्रकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2025

संपादकीय

गणना का उपयोग बेहतर हो

आखिरकार देश में जातीय गणना का रास्ता खुल गया। यह मामला लंबे समय से सियासी द्वंद्व की भी वजह बना हुआ था। आजादी के बाद यह पहला मौका होगा जब जनगणना के दौरान जाति के आंकड़े संग्रहीत किए जाएंगे। हालांकि अनुसूचित जाति और जनजाति के आंकड़े दर्ज किए जाते हैं लेकिन व्यापक स्तर पर जातिगत आंकड़े इससे पहले 1931 की जनगणना में एकत्रित किए गए थे। इस घोषणा को दोनों प्रमुख दलों का समर्थन मिला है जो बताता है कि जाति जनगणना की राह में कोई मुश्किल नहीं है। वास्तव में 2024 के लोक सभा चुनावों में जाति जनगणना कांग्रेस सहित विपक्षी दलों के सबसे प्रमुख चुनावी वादों में से एक था। चूंकि सरकार ने अगली जनगणना में जाति को दर्ज करने का निर्णय ले लिया है इसलिए अब इसके परिणामों पर चर्चा करना भी आवश्यक है। हालांकि, उससे पहले यह ध्यान देना आवश्यक है कि जल्द से जल्द जनगणना करना भी आवश्यक है। कोविड-महामारी के कारण 2020 में होने वाली दशकीय जनगणना को टाल दिया गया था लेकिन यह समझना मुश्किल है कि हालात सामान्य होने के बाद भी सरकार उसे करीब 4 साल से क्यों टालती जा रही है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकड़ों के मुताबिक 2011 में जब भारत में पिछली जनगणना हुई थी तब हमारी अर्थव्यवस्था का आकार 1.8 लाख करोड़ डॉलर था। यह संभव है कि जिस समय तक अगली जनगणना पूरी होगी या उसके परिणाम आने शुरू होंगे तब तक भारत पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बन चुका होगा। यह एकदम अलग देश होगा मगर जाति को शामिल करने की अतिरिक्त आवश्यकता को देखते हुए इसमें और देरी हो सकती है। ऐसे में यह भी संभव है कि अब जनगणना शायद 2026 के बाद ही हो और संविधान के मुताबिक संसदीय सीटों के नए परिसीमन का आधार बने। ऐसे में इसके परिणाम देश में सामाजिक विभाजन को बढ़ाने वाले साबित हो सकते हैं और उनका बहुत सर्तकता के साथ प्रबंधन करना होगा। संभव है कि कुछ राजनीतिक दल विधायिका में भी जाति आधारित आरक्षण की मांग करें। एक स्तर पर जातीय आंकड़े संग्रहीत करना तथा अन्य सामाजिक-आर्थिक आंकड़े हासिल करना उपयोगी हो सकता है क्योंकि यह नीति निर्माण में मददगार होगा। बहरहाल, जोखिम यह है कि जाति के आंकड़ों का इस्तेमाल राजनीतिक कारणों से भी किया जा सकता है। हालांकि यह तो अभी भी हो रहा है। ताजा आंकड़े इस खाई को बढ़ा सकते हैं। कम तादाद वाले जातीय समूहों को हाशिए पर धकेला जा सकता है। जाति जनगणना के अन्य संभावित परिणामों में अधिक आरक्षण की मांग भी शामिल है। वास्तव में इसकी शुरुआत हो भी चुकी है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सुझाव दिया है कि आरक्षण पर सीमा समाप्त की जानी चाहिए और निजी शैक्षणिक संस्थानों में भी कोटा लागू किया जाना चाहिए। व्यापक स्तर पर देखें तो 2025 में जाति जनगणना का इतना महत्त्वपूर्ण होना बताता है कि हम अभी तक कुछ बुनियादी चीजों को दुरुस्त करने में विफल रहे हैं। कई समूहों के लिए जाति जनगणना और आरक्षण में हिस्सेदारी आगे बढ़ने की एक उम्मीद है। कुछ समूह जहां इससे लाभान्वित होंगे वहीं राजनीतिक वर्ग के लिए अहम प्रश्न यह है कि क्या एक ही चीज को अलग ढंग से बांटने से देश बेहतर जगह बन सकेगा और क्या यह सबसे वांछित हल है। इन सभी सवालों के जवाब मिलने में अभी कुछ वक्त तो लगेगा।

जाति जनगणना विभाजन का नहीं, विकास का आधार बने

■ ललित गर्ग

पहलगाम की क्रूर एवं बर्बर आतंकी घटना के बाद मोदी सरकार लगातार पाकिस्तान को करारा जबाव देने की तैयारी के अति जटिल एवं संवेदनशील दौर में एकाएक जातिगत जनगणना कराने का निर्णय लेकर न विपक्षी दलों को बल्कि समूचे देश को चौकाया एवं चमत्कृत किया है। सरकार का यह निर्णय जितना बड़ा है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। मोदी सरकार का जातिगत जनगणना के लिए तैयार होना सुखद और स्वागतयोग्य है। पिछले कुछ समय से जातिगत जनगणना की मांग बहुत जोर-शोर से हो रही थी। कुछ राज्यों में तो भाजपा भी ऐसी जनगणना के पक्ष में दिखी थी, पर केंद्र सरकार का रुख इस पर बहुत साफ नहीं हो रहा था। अब अचानक ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में राजनीतिक मामलों की उच्चस्तरीय कैबिनेट समिति की बैठक में यह फैसला ले लिया गया। बाद में केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मीडिया को बताया कि आगामी जनगणना में जातिगत गणना भी शामिल रहेगी। यह कदम जहां देश के राजनीतिक और सामाजिक समीकरणों को बदलेगा, वही सामाजिक असमानताओं को दूर करने और वंचित समुदायों के उत्थान के लिए लक्षित नीतियों को लागू करने में मील का पत्थर साबित होगा।

जातिगत जनगणना 1931 यानी अखंड भारत में अंग्रेजी सत्ता ने कराई थी। भारत में जनगणना की शुरुआत अंग्रेजी हुकूमत के दौर में, सन 1872 में हुई थी और 1931 तक हुई हर जनगणना में जाति से जुड़ी जानकारी को भी दर्ज किया गया। आजादी के बाद सन् 1951 में जब पहली बार जनगणना कराई गई, तो तय हुआ कि अब जाति से जुड़े आंकड़े नहीं जुटाए जाएंगे। स्वतंत्र भारत में हुई जनगणनाओं में केवल अनुसूचित जाति और जनजाति से जुड़े डेटा को ही पब्लिश किया गया। 2011 में मनमोहन सरकार ने जातिवार जनगणना कराई अवश्य, लेकिन उसमें इतनी जटिलताएं एवं विसंगतियां मिलीं कि उसके आंकड़े सार्वजनिक नहीं किए गए। इसके बाद कुछ राज्यों ने जातियों की गिनती करने के लिए सर्वे कराए, क्योंकि जनगणना कराने का अधिकार केवल केंद्र को ही है। हालांकि भाजपा ने बिहार में जाति आधारित सर्वे का समर्थन किया, लेकिन जातिगत जनगणना को लेकर वह मुखर नहीं रही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अवश्य इसका समर्थन किया। लेकिन अब एकाएक भाजपा को जातिगत जनगणना करना अपने हित में दिखाई दिया क्योंकि अपनी नीतियों एवं योजनाओं के बल पर भाजपा ने पिछड़ी जातियों और दलितों की गोलबंदी कर सत्ता का सफर आसान बनाया है।

जातिगत जनगणना का भारतीय राजनीति और समाज-व्यवस्था पर व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव पडेगा। कांग्रेस और कुछ क्षेत्रीय दल इसकी पुरजोर मांग करने में लगे हुए थे। सबसे ज्यादा जोर राहुल गांधी दे रहे थे, जबकि नेहरू से लेकर नरसिंह राव तक ने इसकी जरूरत नहीं समझी। यह तय है कि जातिगत जनगणना कराने के फैसले पर जहां कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल इसका श्रेय लेना चाहेंगे, वहीं भाजपा इसे सामाजिक न्याय एवं समता-संतुलित समाज-निर्माण केंद्रित अपनी पहल बताएगी। जाति आधारित जनगणना सामाजिक न्याय में सहायक बनेगी या नहीं, लेकिन इससे जातिवादी राजनीति के नए दरवाजे खुलेंगे एवं आरक्षण का मुद्दा एक बार फिर राजनीति की धूरी बनेगा। कांग्रेस एवं विपक्षी दलों ने अपने संकीर्ण एवं स्वार्थी राजनीतिक नजरिये से यह मांग इसलिए उठाई थी ताकि इस आधार पर आगे आरक्षण के मुद्दे को गर्माया जा सके और जातीय गोलबंदी कर चुनावी फायदा लिया जा सके। लेकिन भाजपा-सरकार ने जाति जनगणना का ऐलान कर इस मुद्दे को अपनी पाली में ले लिया है। भले ही इसके आंकड़े आने के बाद आबादी के अनुपात में आरक्षण की मांग से भाजपा कैसे निपटेगी, यह बड़ी चुनौती उसके सामने है। वैसे भी इस तरह की पहल जिन राज्यों में हुई है, वहां भी इसे लेकर विवाद चल रहा है। ऐसे विवाद भाजपा के लिये एक नयी चुनौती बनेंगे। जाति आधारित जनगणना से भारतीय समाज के नये कोने-अंतरे-चुनौतियां सामने आयेगी। लेकिन जातिगत जनगणना के समर्थकों का मानना है कि यह सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। जनगणना में दलितों और आदिवासियों की संख्या तो गिनी जाती है और उन्हें राजनीतिक आरक्षण भी मिला हुआ है लेकिन पिछड़ी और अति पिछड़ी (ओबीसी और ईबीसी) जातियों के कितने लोग देश में हैं इसकी गिनती नहीं होती है। जनगणना एक बहुत बड़ी कवायद है और अगर इसमें जातिगत गणना को भी शामिल किया जा रहा है, तो काम और भी सावधानी एवं सतर्कता से करना होगा। हजारों जातियां हैं और उनकी हजारों उप-जातियां हैं। सबको अलग-अलग गिनने के लिए देश को अपनी डिजिटल शक्ति का उपयोग करना पड़ेगा।

निश्चित ही नयी राजनीतिक एवं नीतिगत स्थितियां समस्याएं खड़ी होगी। अब सभी जातियों की गिनती होगी। यह गिनती मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदायों में भी होनी चाहिए, क्योंकि कोई दावा कुछ भी करे, जाति और उसके आधार पर विभेद सब जगह है। इससे भी ज्यादा आवश्यक, बल्कि अनिवार्य यह है कि जातिगत जनगणना जातिवाद की राजनीति का हथियार न बने और वह भारतीय समाज को विभाजित न करने पाए। इस अंदेशे को दूर करने के कुछ ठोस उपाय होने ही चाहिए कि जाति आधारित जनगणना जातीय विभाजन का कारण न बनने पाए। यह अंदेशा इसलिए है, क्योंकि यह किसी से छिपा नहीं कि कई राजनीतिक दल खुले रूप से जाति की राजनीति करते हैं। माना जाता है कि देश की आबादी में 52 फ़ीसदी लोग पिछड़ी और अति पिछड़ी जाति के हैं। ओबीसी समुदाय के नेताओं का मानना है कि इस हिसाब से उनकी राजनीतिक हिस्सेदारी काफ़ी कम है। राजनीतिक दल इन समुदायों का समर्थन हासिल करने के लिए जाति जनगणना का समर्थन कर रहे हैं।

भारत में जाति जनगणना आजादी के बाद रुकी, पर अब सामाजिक न्याय, नीतिगत सुधार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए इसकी जरूरत महसूस की जा रही है। पारदर्शिता और सावधानी से किया गया यह कदम समावेशी विकास का आधार बन सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जाति आधारित जनगणना को एक समतामूलक समाज निर्माण के दृष्टिकोण से समर्थन देने के संकेत दिए हैं। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि यह संवदेनशील मामला है और इसका इस्तेमाल राजनीतिक या चुनावी उद्देश्यों के लिए नहीं बल्कि पिछड़ रहे समुदाय और जातियों के कल्याण के लिए होना चाहिए। जाति जनगणना के आंकडे प्रस्तुत होने से राजनीति और ब्यूरोक्रेसी में पिछड़ी और अति पिछड़ी जातियों की हिस्सेदारी कितनी कम है, यह डर संभवतः भाजपा को सता रहा था। लेकिन भाजपा का यह डर या तो ख़त्म हो गया है, या फिर उसने बिहार में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में चुनावी लाभ लेने के लिए ये क़दम उठाया है। भाजपा इसके ख़िलाफ़ थी, उसने जातिगत जनगणना को देश को बांटने की कोशिश करने वाला बताया था। लेकिन एनडीए में शामिल भाजपा की ज्यादातर सहयोगी पार्टियां इसके पक्ष में हैं।

जातिगत जनगणना के आंकड़े 2026 या 2027 के अंत में आएंगे और तब तक बिहार और यूपी के चुनाव हो चुके होंगे। इसलिए इसका चुनावी लाभ लेने की बात सही नहीं है। वैसे भी भाजपा ने हाल के वर्षों में पिछड़ों और दलितों समुदाय को अपने साथ जोड़ने में कामयाबी हासिल की है। भाजपा इस जातिगत गणना से ये भी दिखाना चाहती है कि पिछड़ों के एक-आध समुदाय को छोड़ दें तो ओबीसी समुदाय का बड़ा हिस्सा उसके साथ है। वैसे तो विभिन्न राजनीतिक दल अमुक-अमुक जातियों का नेतृत्व करने के लिए केवल जाने ही नहीं जाते, बल्कि ऐसा दावा भी करते हैं। इसलिये जाति आधारित जनगणना का लाभ है तो हानि भी है। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि जातिगत जनगणना वंचितों-पिछड़ों के उत्थान में सहायक बने, लेकिन यदि वह विभाजन को बल देती है और देश की एकजुटता प्रभावित करती है तो इससे दुर्भाग्यपूर्ण और कुछ नहीं होगा। जनगणना के आंकड़े सरकार और जनता के लिए खुले और पारदर्शी होने चाहिए, ताकि सामाजिक संबंधों, आर्थिक अवसरों और राजनीतिक गतिशीलता की नई एवं समानतामूलक दिशाएं उद्घाटित हो सके और भारतीय समाज की विविधता की एक व्यापक सकारात्मक तस्वीर प्रस्तुत की जा सके। कोई भी आंकड़ा तभी सराहनीय है, जब उससे विकास तेज करने में मदद मिलती हो, एक समतामूलक एवं संतुलित समाज की संरचना को बल मिलता हो।

(साभार : यह लेखक के निजी विचार हैं)

सुरक्षा चुनौतियों के बीच पूर्ण राज्य का प्रश्न

■ प्रमोद जोशी

पहलगाम हमले से कुछ हफ़्ते पहले ही जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मुलाक़ात के बाद जम्मू-कश्मीर के राज्य का दर्जा बहाल होने को लेकर उम्मीद जताई थी। उस समय उन्होंने कहा था, हमें लगता है कि सही समय आ गया है, विधानसभा चुनाव हुए छह महीने बीत चुके हैं। शाह यहां आए थे, मैंने उनसे अलग से मुलाक़ात की, जो अच्छी रहीज मुझे अब भी उम्मीद है कि जम्मू-कश्मीर को जल्द ही अपना राज्य का दर्जा वापस मिल जाएगा।

इसके पहले विधानसभा में विपक्ष के नेता सुनील शर्मा ने कहा था कि राज्य का दर्जा हमारा नैरेटिव है, यह भाजपा का वादा है। अब्दुल्ला को लोगों से किए गए वादों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। दो हफ्ते पहले राष्ट्रीय और खासतौर से जम्मू-कश्मीर की राजनीति में वक़्फ़ कानून को लेकर सरगर्मी थी, पर अब पहलगाम हमले के कारण हालात बदले हुए हैं। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या इस हमले के कारण जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा मिलने में और विलंब होगा? क्या नेशनल कान्फ्रेंस इस मामले को उठाना बंद कर देगी?

11 दिसंबर, 2023 को, उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त करने को सर्वसम्मति से बरकरार रखा। साथ ही केंद्र सरकार को जम्मू और कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने और सितंबर 2024 से पहले विधानसभा चुनाव कराने का निर्देश दिया। पिछले साल चुनाव भी हो गए, पर राज्य के दर्जे की बहाली नहीं हुई है। नई सरकार बनने के बाद 19 अक्तूबर, 2024 को जम्मू-कश्मीर मंत्रिमंडल ने एक प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार से राज्य का दर्जा बहाल करने का औपचारिक आग्रह भी कर दिया। उपराज्यपाल ने इस प्रस्ताव को मंजूरी भी दे दी। अब अंतिम निर्णय केंद्र सरकार और संसद पर निर्भर है।

कुछ राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि केंद्र सरकार इस मुद्दे को धीरे-धीरे हल करना चाहती है, ताकि स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक स्थिरता बनी रहे। पहलगाम हमले ने इस स्थिरता को आंशिक रूप से भंग किया है। केंद्र सरकार अपने आत्मविश्वास में कमी नहीं दिखाना चाहती है। साथ ही हरेक कदम को वह अच्छी तरह सोच समझकर उठाएगी। फिलहाल तो उसका ध्यान पाकिस्तान को माकूल जवाब देने पर है, पर इससे निपटने के बाद संभवतः इस दिशा में भी फैसला होगा।

केंद्र-प्रशासित क्षेत्र होने के कारण जम्मू-कश्मीर में उपराज्यपाल की शक्तियां बहुत अधिक हैं। कोई भी विधेयक या कानून बिना उनकी मंजूरी के पारित नहीं हो सकता। पूर्ण राज्य का दर्जा देने से काफी शक्ति स्थानीय सरकार के पास आ जाएगी, जिससे केंद्र का प्रत्यक्ष नियंत्रण कम हो जाएगा। केंद्र सरकार की रणनीति हो सकती है कि वह अभी इस क्षेत्र में अपनी प्रशासनिक पकड़ बनाए रखे। दूसरे अनुच्छेद 370 और 35ए हटने के बाद, जम्मू-कश्मीर में गैर-स्थानीय लोगों को डोमिसाइल सर्टिफिकेट देने की प्रक्रिया शुरू हुई है। पूर्ण राज्य का दर्जा देने से स्थानीय सरकार को इन नीतियों पर अधिक नियंत्रण मिल जाएगा, जो केंद्र की मौजूदा नीतियों के विपरीत भी हो सकता है।

व्यावहारिक रूप से इस मामले को ज़्यादा टालने का कोई मतलब नहीं है और आसार हैं कि भविष्य में संसद द्वारा पुनर्गठन अधिनियम में संशोधन के साथ यह दर्जा बहाल हो जाएगा। राज्य में हालात को सामान्य साबित करने के लिए भी ज़रूरी है कि जम्मू-कश्मीर को उसका दर्जा वापस दिलाया जाए। केंद्रशासित क्षेत्र होने के कारण कानून-व्यवस्था और पुलिस राज्य के अधीन नहीं है। और शायद यह एक बड़ा कारण है, जिसने इस फैसले को रोक रखा है। केंद्र सरकार ने कई बार साफ-साफ कहा है कि पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा, पर पहलगाम की हिंसा ने फिर से अटकलों को जन्म दे दिया है।

उमर अब्दुल्ला राज्य का दर्जा वापस करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं, जिसे अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के साथ ही समाप्त कर दिया गया था। वे मानते हैं कि विशेष दर्जे की लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है, लेकिन बदली हुई परिस्थितियों में उन्होंने इस बात को तल्खी के साथ कहना बंद कर दिया है। अब्दुल्ला ने फरवरी में कहा था, हम इस मुद्दे को जीवित रखेंगे, जो हमने किया भी है लेकिन हमने लोगों को यह कहकर कभी गुमराह नहीं किया कि वे एक ऐसी सरकार चुनने जा रहे हैं जो तुरंत विशेष दर्जा बहाल करेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि जिन लोगों ने इसे हमसे छीन लिया, उनसे यह उम्मीद करना कि वे इसे हमें वापस देंगे, सिर्फ इसलिए कि हम इसके लिए कह रहे हैं, बेकार है। अब पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद उमर अब्दुल्ला ने प्रदेश की विधानसभा के विशेष सत्र के दौरान एक संदेश दिया कि यह राजनीतिक अवसरवाद का समय नहीं है। राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग करने के लिए सदन के कुछ सदस्यों के आह्वान को खारिज करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि मैं इस मौके का इस्तेमाल राज्य का दर्जा मांगने के लिए नहीं करूंगा। मैं सस्ती राजनीति में विश्वास नहीं करता। इस वक्त मुझे 26 लोगों की जान की परवाह करनी चाहिए, न कि केंद्र से राज्य का दर्जा मांगना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि पर्यटकों की सुरक्षा की गारंटी देना हमारी मौलिक जिम्मेदारी थी और हम अपने कर्तव्य में विफल रहे।

जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश है, इसलिए सुरक्षा की जिम्मेदारी उनकी नहीं है, पर एक परिपक्व राजनेता के रूप में उन्होंने ऐसा कहकर केंद्र सरकार पर नैतिक दबाव बनाया है। सवाल है कि क्या राज्य सरकार को जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा का भागीदार नहीं बनाया जाना चाहिए? विधानसभा का विशेष सत्र 22 अप्रैल को हुए क्रूर हमले पर चर्चा के लिए बुलाया गया था, जिसमें एक मिनट का मौन रखने और पीड़ितों को श्रद्धांजलि देने के बाद सदन ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें देश और जम्मू-कश्मीर के सांप्रदायिक सौहार्द और प्रगति को बाधित करने की कोशिश करने वालों के नापाक इरादों को दृढ़ता से हराने का संकल्प लिया गया। अब्दुल्ला ने कहा कि राज्य के दर्जे पर राजनीतिक बातचीत का समय बाद में आएगा।

पहलगाम में पर्यटकों की हत्या सुरक्षा के लिए धक्का होने के साथ-साथ भारतीय राष्ट्र राज्य के लिए एक प्रकार की चुनौती है। जम्मू-कश्मीर एक दीर्घकालिक रणनीति पर चल रहा है, जिसका पहला कदम अनुच्छेद 370 को हटाना था। पिछले साल के अंत में राज्य में हुए सफल चुनावों ने यहां की जनता के मन में भरोसा भरा है। श्रीनगर तक रेलवे संपर्क स्थापित करना हमारी एक और बड़ी सफलता है। ज़ाहिर है कि पाकिस्तानी 'डीप स्टेट' को यह 'नया कश्मीर' पसंद नहीं आया है। भारत सरकार इस दौरान आतंकवाद पर केंद्रीय निगरानी के साथ राज्य का दर्जा देने की तैयारी कर रही है और इसका वादा उसने कई बार किया है।

(साभार : लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, यह उनके निजी विचार हैं)

बदला लेने से मनुष्य अपने शत्रु के समान हो जाता है।
- बेकन

आज का इतिहास

- 1764 - बंगाल के नवाब मीर कासिम को अंग्रेजों ने हराया।
- 1913 - पहली भारतीय फीचर फिल्म राजा हरिश्चन्द्र प्रदर्शित हुई।
- 1919 - अमानुल्ला खान द्वारा ब्रिटिश भारत पर आक्रमण जिससे ऐंग्लो-अफगान युद्ध की शुरुआत हुई।
- 1989 - देश के पहले 50 किलोवाट के सौर ऊर्जा संयंत्र का हरियाणा में शुभारंभ।
- 1993 - संयुक्त राष्ट्र ने विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस की घोषणा की।
- 1998 - यूरो को यूरोपीय मुद्रा के रूप में स्वीकार करने का यूरोपीय नेताओं का ऐतिहासिक फैसला।
- 2002 - अमेरिकी मीडिया ने परवेज मुशर्रफ़ के जनमत संग्रह को शर्मनाक जनमत संग्रह बताया।
- 2003 - आस्ट्रेलिया के स्टीव वॉ टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज बने।
- 2006 - पाकिस्तान और ईरान ने 3 देशों की गैस पाइप लाइन परियोजना से भारत को अलग करने के उद्देश्य से द्विपक्षीय गैस पाइप लाइन करार पर दस्तखत किए।
- - शिक्षाविद कमलेश पटेल को ब्रिटेन के हाउस आफ़ लार्ड्स में ग़ैर दलीय पीयर नियुक्त किया गया।
- 2008 - टाटा स्टील लिमिटेड को ब्रिटेन में कोयला खनन करने का पहला लाइसेंस प्राप्त हुआ।
- 2013 - चीन में डायनासोर का लगभग 16 करोड़ साल पुराना जीवाश्म मिला।

निशाना

चल रही लड़ाई !

-कृष्णेन्द्र राय

तू डाल डाल, मै पात पात ।
चल रहा फिलहाल ।।
कौन सही कौन गलत ।
बड़ा है सवाल ।।
है लड़ाई जारी ।
सबकी अपनी जंग ।।
है कोई नाराज ।
किसी को उमंग ।।
कोर्ट और सरकार में ।
चल रही लड़ाई ।।
कौन पड़ेगा भारी ?
है वो घड़ी आई ।।
अपने अपने ढ़ंग से ।
हैं सबके प्रहार ।।
सबकी अपनी हद ।
और अपने अधिकार ।।

भगवान चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव पर मातृशक्ति द्वारा निकाली जाएगी शोभायात्रा

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो

कायस्थ समाज द्वारा शहर में भगवान चित्रगुप्त का प्रकटोत्सव श्रद्धा और हर्षोल्लास से 4 मई को मनाया जाएगा । कायस्थ समाज के कुल देवता माने जाने वाले भगवान चित्रगुप्त वैशाख सप्तमी को प्रकट हुए थे। इसके चलते चित्रगुप्त घाट स्थित चित्रगुप्त मंदिर में विशेष आयोजन किए जाएंगे। इसके साथ ही कायस्थ समाज मातृशक्ति द्वारा एक विशाल शोभायात्रा भी निकाली जाएगी। कार्यक्रम के तहत भगवान का पूजा पाठ होगा और अनेक धार्मिक आयोजन किए जाएंगे। आयोजन की जानकारी देते हुए ज्योति अभय वर्मा मातृशक्ति जिला अध्यक्ष सहित कायस्थ समाज की पदाधिकारी प्रीति खरे , सुमन वर्मा और मंजू श्रीवास्तव ने बताया कि भगवान चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव पर विशेष कार्यक्रम किए जाएंगे।उन्होंने

चित्रगुप्त घाट स्थित चित्रगुप्त मंदिर में 4 मई को होंगे विशेष आयोजन

बताया भगवान चित्रगुप्त की पूजा पाठ से विद्या बुद्धि और आर्थिक उन्नति होती है और समाज में धार्मिक चेतना तथा एकता को बढ़ावा मिलता है।

चित्रगुप्त घाट से प्रारंभ शोभा यात्रा में शामिल होंगे विशिष्ट जन..

ज्योति वर्मा ने बताया कि 4 मई को प्राचीन श्री चित्रगुप्त मंदिर, चित्रगुप्त घाट से भगवान चित्रगुप्त की विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी।शोभायात्रा में सांसद दर्शन सिंह चौधरी , विधायक डॉक्टर सीताशरण शर्मा , पूर्व विधायक गिरजा शंकर शर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष नीतू यादव, समाज सेवी अमृत राजे पलिया सहित कायस्थ समाज की विशिष्टजन और अनेक श्रद्धालु शामिल होंगे। चित्रगुप्त घाट से शोभायात्रा शुरू होकर एकता चौक ,मोरछली चौक, इतवारा बाजार, हलवाई चौक , सराफा चौक, होली चौक होते हुए चित्रगुप्त घाट पहुंचेगी ।

जल संरक्षण को सार्थक करता जल गंगा संवर्धन अभियान

जनपद पंचायत केसला के ग्राम नया मलुपुरा में खेत तालाब निर्माण प्रारंभ

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारंभ किए गए जल गंगा संवर्धन अभियान को मध्यप्रदेश में साकार करने हेतु मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पूरे प्रदेश में जल संरक्षण के विविध कार्य तीव्र गति से किए जा रहे हैं। इस अभियान की शुरुआत 30 मार्च से की गई है और यह 30 जून तक संचालित किया जाएगा। अभियान के तहत श्रमदान, दीवार लेखन, जल चौपाल जैसे जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जल संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। इसी क्रम में राज्य शासन की खेत-तालाब योजना का लाभ लेकर जिले के कई किसान अपने खेतों में तालाब का निर्माण कर रहे हैं, जिससे न केवल जल संरक्षण को बढ़ावा मिल रहा है, बल्कि मनरेगा (रोजगार गारंटी योजना) के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार भी उपलब्ध हो रहा है।

नया मलुपुरा में खेत तालाब निर्माण का कार्य प्रारंभ

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत ग्राम पंचायत नया भाड़भूड़ के ग्राम नया मलुपुरा में हितग्राही श्री लखन पासे के खेत में खेत तालाब निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया है। यह पहल ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षा जल के संचयन को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। खेत तालाब निर्माण से भू-जल स्तर में सुधार होगा और किसानों को सिंचाई हेतु सतत जल स्रोत उपलब्ध हो सकेगा। यह प्रयास जल संरक्षण को मजबूती देने के साथ-साथ कृषि उत्पादकता को भी बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा।

ग्राम बीजनवाड़ा में जल संरक्षण का संदेश देने के लिए दीवार लेखन और शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

नर्मदापुरम. कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद, जिला नर्मदापुरम द्वारा जिले के विभिन्न स्थानों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जन-भागीदारी के माध्यम से जल संरक्षण को लेकर निरंतर जागरूकता गतिविधियां संचालित की जा रही हैं।

इसी कड़ी में ग्राम पंचायत बीजनवाड़ा (सेक्टर क्रमांक 4), विकासखंड पिपरिया में जिला समन्वयक श्री पवन सहगल के मार्गदर्शन एवं विकासखंड समन्वयक के नेतृत्व में नवांकुर संस्था मंजू महिला शिक्षा एवं कल्याण समिति द्वारा दीवार लेखन का कार्य किया गया। दीवारों पर प्रेरक स्लोगनों के माध्यम से जल के महत्व को दर्शाया गया। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया तथा सभी को जल बचाने की शपथ दिलाई गई। उक्त आयोजन द्वारा ग्रामीणों में जल की महत्ता को लेकर चेतना जागृत की गई तथा उन्हें जल संचयन की आवश्यकता के संबंध में जानकारी दी गई। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिलेभर में इसी तरह की गतिविधियों के माध्यम से जल संरक्षण को जन-आंदोलन का रूप देने का प्रयास किया जा रहा है। प्रशासन और सामाजिक संगठनों के संयुक्त प्रयास से यह अभियान जिले को जल समृद्ध बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

अभियान के तहत जिले में जल संरक्षण एवं जल संवर्धन से संबंधित विभिन्न गतिविधियां जारी

कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशन में जिले में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान संचालित किया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना एवं पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण व पुनर्जीवन करना है। अभियान के तहत जिले में व्यापक स्तर पर दीवार लेखन, जागरूकता रैली, पोस्टर-बैनर प्रदर्शन, रंगोली प्रतियोगिता, ग्राम सभाएं, जल चौपाल जैसी विविध जन-जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से आमजन को जल की महत्ता और संरक्षण के उपायों की जानकारी दी जा रही है। साथ ही जिले के विभिन्न ग्रामों में कूप मरम्मत, तालाब जीर्णोद्धार, नहरों की सफाई, खेत तालाब निर्माण, सोख्ता गड्ढा (सोकपिट) निर्माण जैसी अनेक तकनीकी गतिविधियां भी संपन्न की जा रही हैं। इन कार्यों का उद्देश्य जल स्रोतों को पुनर्जीवित करना और भू-जल स्तर को बनाए रखना है। अभियान के दौरान जिले के सभी संबंधित विभाग समन्वित प्रयासों से जल स्रोतों की साफ-सफाई, पौधारोपण तथा परंपरागत जल संरचनाओं के रखरखाव व संवर्धन में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। अभियान के अंतर्गत जनपद पंचायत केसला द्वारा ग्राम कांदई कला में डगवेल रिचार्ज कार्य प्रारंभ किया गया है। इस कार्य का उद्देश्य भू-जल स्तर को पुनः संतुलित करना एवं वर्षा जल के बेहतर संचयन के माध्यम से जल संकट को कम करना है। यह प्रयास जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल मानी जा रही है।

ज़िंदगी बचाने की मुहिम, प्रेरणा बन रहे हैं गुप्ता, रक्तदान में हमेशा आगे

जरूरत पड़ने पर करते रहते हैं पीड़ित मानवता के लिए रक्तदान

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो

कहते हैं नर सेवा ही नारायण सेवा है. जब हम किसी की मदद करते हैं तो यह मदद ईश्वर अंश जीव अविनाशी की ही होती है. अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन सही मायने में जीवन वह है जो दूसरों के काम आए.

नर्मदापुरम नगर में एक ऐसे ही व्यक्ति है प्रदीप गुप्ता जिनकी पहचान एक सफल व्यवसायी और सोशल मीडिया के पत्रकार के रूप में तो है ही लेकिन इससे भी बड़ी पहचान उनकी यह है कि वह पीड़ित मानवता की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं. खास तौर पर जब कोई इंसान जिंदगी और मौत से जूझ रहा हो तो उस दौरान उसे खून की जरूरत पड़ती है. ऐसी संकट की घड़ी में प्रदीप गुप्ता किसी को भी अपना खून देने से नहीं हिचकिचाते और वह पीड़ित व्यक्ति जिस अस्पताल में भी एडमिट होता है प्रदीप गुप्ता वहां जाकर अपना खून देने में देरी नहीं करते.

शुक्रवार को प्रदीप गुप्ता ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि समाज सेवा केवल शब्दों से नहीं, कर्मों से होती है। शासकीय जिला चिकित्सालय में भर्ती एक महिला मरीज को डिलीवरी के दौरान बी पॉजिटिव ब्लड की जरूरत थी, लेकिन ब्लड की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी। परेशान परिजनों ने जब हर

संभव प्रयास कर लिए, तब किसी जान-पहचान वाले ने उन्हें प्रदीप गुप्ता का नंबर दिया।

गुप्ता जी ने तुरंत स्थिति की गंभीरता को समझा और उन्होंने जिला चिकित्सालय पहुँचकर अपना -पॉजिटिव ब्लड डोनेट किया। इसके बदले में मरीज के परिजनों ने ब्लड बैंक से बी पॉजिटिव यूनिट एक्सचेंज में लेकर ऑपरेशन सफलतापूर्वक पूरा करवाया।

यह पहला मौका नहीं है, इससे पहले भी प्रदीप गुप्ता 6-7 बार रक्तदान कर चुके हैं। उनका मानना है कि रक्तदान सबसे बड़ा दान है, जिससे किसी की जिंदगी बचाई जा सकती है।

युवाओं को संदेश देते हुए उन्होंने हर युवा को आगे आकर रक्तदान करना चाहिए और नशे से दूर रहना चाहिए, क्योंकि नशा किसी की मदद नहीं करता, लेकिन एक यूनिट खून किसी की पूरी जिंदगी बदल सकता है। इसमें कोई शक नहीं कि प्रदीप गुप्ता जैसे लोग समाज के लिए प्रेरणा हैं, जो बिना किसी दिखावे के, ज़रूरतमंदों के लिए फरिश्ते की तरह सामने आते हैं।

प्यासे परिंदों के लिए पेड़ों पर टांगे जलपात्र

गंजबासौदा। जम्मू कश्मीर के पहलगाम मे पाकिस्तानी आतंकवादियो द्वारा किए गए हमले में शहीद हुए पर्यटको की याद में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच द्वारा भीषण गर्मी मे पानी के

लिऐ परेशान प्यासे परिंदो के लिऐ पेडो पर सकोरे टांगे गये। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच गौ सेवा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय सह संयोजक सैयद शफ़ाकत हुसैन कादरी ने कहा कि आतंकवाद खत्म होना बहुत जरूरी है कश्मीर पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले ने पूरे देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को झकझोर कर रख दिया। इस हमले के दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने सरकार से जल्द से जल्द पाकिस्तान के खिलाफ एक्शन लेने सख्त करवाई की मांग करते है। समाजसेवी रोहित सिंह दांगी नेभारत सरकार से मांग की पाकिस्तान को नक्शे से हटाना होगा आतंकवाद को जड़ से मिटाना होगा। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच गौ माता के लिऐ जल पात्र विभिन्न स्थानो पर रखने एवं प्यासे परिंदो के लिऐ दाना पानी रखने सकोरे बांटने का आयोजन करने वाली प्रथम सामाजिक संस्था है। इंद्रेश कुमार वरिष्ठ प्रचारक व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से इसके अलावा मंच द्वारा साल भर सामाजिक चेतना व अन्य विषयो पर जन जागरण अभियान चलाकर जागरुक किया जाता रहा है।

ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण का हुआ शुभारंभ

गंजबासौदा। शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय में ग्रीष्म कालीन खेल एवं अन्य सांस्कृतिक नृत्य संगीत चित्रकला आदि के प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया। विद्यालय के प्राचार्य

एमसी शर्मा एवं वरिष्ठ शिक्षक अनिल दुबे ने मां सरस्वती जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पूजन अर्चन पश्चात शिविर का शुभारंभ किया प्राचार्य एमसी शर्मा ने सभी छात्र छात्राओं से शिविर में सम्मिलित होकर समस्त कलाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए कहा साथ ही अलग अलग विषय के विशेषज्ञ बुलाकर बच्चो को लाभान्वित करने की बात कही। इस शिविर में आने वाले बच्चों के लिए ठंडा और शुद्ध पानी के लिए विद्यालय द्वारा वाटर कुलर भी लगाया गया है यह शिविर 20 मई तक चलेगा इसमें उत्कृष्ट विद्यालय के अतिरिक्त अन्य विद्यालय के छात्र छात्राये भी सम्मिलित हो सकते हैं।

शिविर में नेत्र रोगियों को मिला लाभ

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो

गंजबासौदा। सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा रवि उपाध्याय के कुशल मार्ग दर्शन में नेत्र शिविर ग्यारसपुर के शासकीय अस्पताल में लगाया गया। जिसमें स्वर्गीय श्री नारायण सदाशिव पिंगले सेवा संस्थान द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। शिविर में डॉ ब्रजशर्मा एवम शासकीय अस्पताल के नेत्र सहायक सुनील जैन ने 174 मरीजों का नेत्र परीक्षण किया। जिसमें 23 मरीजों को मोतिया बिंद चिन्हित किया गया। 19 चश्मे प्रदान किए गए। 29 लोगो के नंबर ट्रस्ट के अतुलद्वारा निकालकर दिए गए। वहीं दूसरी ओर कैंप प्रभारी गोलू राठौर एवम काउंसलर धर्मेंद्र शर्मा द्वारा बीपी एवम शुगर लेवल की जांच की गई। समाज सेवी सुनील बाबू पिंगले ने कहा कि इस शिविर में अस्पताल के। प्रभारी एवम समस्त स्टाफ ने सहयोग प्रदान किया। ट्रस्ट अंधत्व निवारण के लिए लगातार प्रयास कर रहा है जो कि सरहनीय एवम अनुकरणीय उदाहरण है।

अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध सख्त कार्रवाई

नर्मदापुरम नगर में कच्चे-पक्के निर्माण हटाए

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो

कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार जिले में अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध नियमित रूप से सख्त कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में नर्मदापुरम जिला मुख्यालय पर नगर के विभिन्न क्षेत्रों में अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की गई।

कार्यवाही नगर पालिका परिषद नर्मदापुरम एवं राजस्व अमले द्वारा संयुक्त रूप से की गई। इसमें पुराना बस स्टैंड, हलवाई चौक, सब्जी मंडी सहित नगर के अन्य प्रमुख स्थानों पर अतिक्रमण हटाए गए।

अभियान के तहत जेसीबी मशीनों की मदद से अवैध रूप से किए गए पक्के निर्माणों को ध्वस्त किया गया। इसके साथ ही सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर अवैध रूप से लगाई गई टपरियाँ एवं गुमठियाँ भी हटाई गईं।

प्रशासन द्वारा सार्वजनिक परिसरों, सड़कों और चौक-चौराहों पर किए गए किसी भी प्रकार के अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध

नियमित रूप से अभियान चला कर कार्यवाही की जा रही है।

आश्वासन के बावजूद नन्ही देवरी नहीं पहुंचा पानी, 5 दिन के अंदर पानी नहीं मिला तो ग्राम वासी करेंगे आंदोलन

तेंदूखेड़ा। जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा के अंतर्गत आने वाले ग्राम पंचायत खमरिया कला में शामिल आदिवासी टोला नन्ही देवरी में पानी की समस्या बढ़ती जा रही है पूर्व में ग्राम वासियों द्वारा उच्च अधिकारियों को पत्राचार किया गया था जिसके संबंध में उच्च अधिकारीयों द्वारा ग्राम नन्ही देवरी पहुंचकर ग्राम वासियों की समस्या सुनी थी लेकिन अधिकारियों के आश्वासन के बाद भी पानी की आज तक उचित व्यवस्था नहीं की गई है जिसके कारण ग्रामवासी पुनः अधिकारियों के दरवाजे खटखटाने को मजबूर है अधिकारियों द्वारा आश्वासन दिया गया था कि एक सप्ताह के भीतर ग्राम नन्ही देवरी को पानी पहुंचा दिया जाएगा अधिकारियों के कहने अनुसार ग्राम वासियों ने चंदा जोड़कर नाली खुदवाने का कार्य दो दिवस के अंदर पूर्ण कर लिया गया था लेकिन आज तक पाइपलाइन बिछाने का कार्य नहीं हुआ है जिसके कारण ग्राम वासियों को विभिन्न प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

मेट्रो एंकर जिले की विभिन्न परियोजनाओं में आयोजित हुए कार्यक्रम

लाडली लक्ष्मी दिवस पर जिले में रहा उत्सव का माहौल

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो

मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री लाडली लक्ष्मी योजना के अंतर्गत लाडली लक्ष्मी दिवस को 02 मई 2025 को जिले भर में उत्सव के रूप में हर्षोल्लास से मनाया गया। जिले के समस्त नगरीय निकायों, जनपद पंचायतों, आंगनवाड़ी केंद्रों एवं ग्राम पंचायतों में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में पौधारोपण, कन्या पूजन एवं दीप

प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके उपरांत लाड़ली लक्ष्मी योजना से लाभान्वित बालिकाओं के साथ संवाद कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां तथा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने वाली बालिकाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान नवीन पंजीकृत बालिकाओं के अभिभावकों को योजना की कुल राशि 1,43,000 रुपए का आश्वासन प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। अब तक जिले में 89,342 बालिकाओं को मुख्यमंत्री लाडली लक्ष्मी योजना का लाभ प्रदान किया जा चुका है। योजना के अंतर्गत बालिकाओं को कक्षा 6 में 2000 रुपए, कक्षा 9 में 4000 रुपए, कक्षा 11 एवं 12 में 6000-6000 रुपए, उच्च शिक्षा हेतु 25,000 रुपए तथा 21 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर 1,00,000 रुपए की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है।

जिले की विभिन्न परियोजनाओं में आयोजित कार्यक्रमों में लाडली लक्ष्मी बेटियों का पुष्पगुच्छ एवं उपहारों के साथ स्वागत किया गया। नृत्य, गायन और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से बालिकाओं ने अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिससे उपस्थित सभी दर्शक भावविभोर हो उठे। मुख्यमंत्री लाडली लक्ष्मी योजना के माध्यम से बालिकाओं के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक सशक्तिकरण का कार्य निरंतर जारी है।

लाडली उत्सव में बालिकाओं का किया सम्मान

गंजबासौदा। ग्राम उदयपुर में लाडली उत्सव का आयोजन किया गया जिसमे लाडली लक्ष्मी बालिकाओं का सम्मान किया गया। उन्हे प्रमाण पत्र दिए गए बालिकाओं को बताया गया की वह अपनी शिक्षा जारी रखें और लाडली लक्ष्मी बालिकाओं को प्राप्त होने वाले लाभों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में ग्राम की लाडली बेटियां उनकी माताएं एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता माया कोरी, कलाबाई आदिवासी मनीषा पंथी, राजकुमारी अहिरवार, रामश्री अहिरवार, रजनी शर्मा एवं सहायका लक्ष्मी सेन, प्रभा कोरी, पिंकी साहू एवं ग्राम की महिलाएं उपस्थित रहीं।

कलेक्टर ने निकायों के कार्यों का जायजा लिया, अधिकारियों को दिए निर्देश

सिरोंज, दोपहर मेट्रो

विदिशा कलेक्टर अंशुल गुप्ता ने निकाय के कार्यों की समीक्षा गुरुवार को अपने चेम्बर में की उन्होंने योजनाओं की लागत राशि रूपये 13.44 करोड से प्रधानमंत्री आवास एएचपी घटक अंतर्गत निर्माणाधीन आवासों को शीघ्र गति से पूर्ण कराये जाने एवं यहां पर पूर्व से निवासरत परिवारों को स्थायी पाइप लाइन से पेयजल उपलब्ध कराने व सीवरेज एवं विद्युत की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने के निर्देश अधिकारियों को देते हुए कहा कि समिति गठित कर ठेकेदारों द्वारा कराये गये कार्यो की समय सीमा में समीक्षा की जाएं। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के समक्ष निकाय क्षेत्र में वाटर लेविल बढ़ाये जाने हेतु एक्वाकर मैनेजमेन्ट प्लान लागत राशि 80 लाख का प्रस्तुतिकरण योजना सलाहकर द्वारा किया गया। जिसमें शहर का भूजल स्तर में वृद्धि हेतु वर्षा जल संग्रहित करने के लिये 35 संरचनाओं परकोलेशन टैंक 02 नग, रीचार्ज शॉफ्ट 04 नग सरफेंस डाइक 01, 15 कुओं का रीचार्ज, एवं 12 स्थानों पर रैनवाटर हार्वेस्टिंग किये जाना है।

ततसंबंध में पुनः सर्वे कर योजना का परीक्षण कराने के निर्देश दिये गये है।

वर्षा ऋतु में शहर के अन्दर होने वाले जलभराव की स्थिति से निपटने हेतु स्टॉम वाटर ड्रेनेज सिस्टम लागत राशि रूपये 50 करोड की योजना सलाहकर आत्विक कन्सलटेन्सी इन्फ्रास्टेक्चर विदिशा द्वारा शहर के पाँच प्रमुख नाले क्रमश चोरघाट नाला,-पीलिया नाला, सागर पुलिया नाला, एवं अन्य सहायक नालों का निर्माण की योजना प्रस्तुत की गई, जिस पर विस्तृत सर्वेक्षण रिर्पोट तैयार किये जाने एवं अतिमहत्वपूर्ण एवं महत्वपूर्ण कार्यो को पृथक-पृथक से प्रदर्शित किये जाने एवं योजना में प्रस्तावित स्थलों का निरीक्षण कराये जाने के निर्देश दिए गए हैं।

उक्त बैठक में विदिशा नगरपालिका अधिकारी दुर्गेश सिंह के अलावा निकाय के अन्य अधिकारी तथा इंजीनियर मौजूद रहे।

108 कुंडली महायज्ञ को भव्यता से करने के लिए कुशवाहा समाज की बैठक, हेलीकॉप्टर से बरसेंगे फूल

सिरोंज, दोपहर मेट्रो

तीर्थ स्थल देवपुर धाम में 6 मई से श्री विष्णु महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा इसकी व्यवस्थाओं को लेकर शुक्रवार को कुशवाह समाज की बैठक श्री लव कुश कुटी आश्रम में आयोजित हुई

बैठक की अध्यक्षता बाल योगी श्री 108 श्री राम दास महंत जी ने की आगामी 6 मई से 12 मई तक सप्त दिवसीय श्री विष्णु 108 कुण्डीय महायज्ञ होगा साथ ही 7 दिवसीय श्रीमदभागवत कथा दोपहर दो बजे से 5 बजे तक होगी एवं रात्रि 8 बजे से श्री कृष्ण लीला होगी और प्रतिदिन भक्तों के लिए भंडारा चलेगा तथा श्रद्धालुओं पर फूल बरसा करने के लिए हेलीकॉप्टर भी किराए पर लेने ने की बात सामने आए इसको लेकर प्रशासन ने व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया था। कुशवाहा समाज बंधुओ ने सभी धर्म प्रेमी बंधुओ से आग्रह है की सभी महायज्ञ में शामिल होकर धर्म लाभ प्राप्त करे । आयोजन

6 मई को भव्य कलश यात्रा के साथ शुरू होगा मां यज्ञ 12 मई को समापन होगा । इस दौरान बड़ी संख्या में कुशवाह समाज के बंधु मौजूद थे।

ग्राम खेरूआ में लाड़ली लक्ष्मी दिवस का आयोजन हुआ

सिरोंज। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के अंतर्गत आज दो मई को पूरे प्रदेश में लाड़ली लक्ष्मी दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया है। विदिशा जिले में भी उक्त आयोजन विभिन्न स्थलों पर आयोजित किया गया था। जिला स्तरीय कार्यक्रम विदिशा विकासखंड के ग्राम खेरूआ में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता कैलाश रघुवंशी ने कहा कि महिलाओं के सम्मान में राज्य सरकार के द्वारा जो नवाचार किए जा रहे हैं उससे प्रदेश की ख्याति चहूंओर बढ़ी है। उन्होंने लाड़ली लक्ष्मी योजना की सराहना करते हुए कहा कि बेटियों के भविष्य को उज्जवल बनाने में यह योजना अति महत्वपूर्ण है। बेटियां समाज की धरोहर हैं, शिक्षित हों, सशक्त हों इस और कोई कौर कसर नहीं छोड़ी जा रही है। कार्यक्रम के उद्देश्यों को महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी ने रेखांकित किया। इस अवसर पर योजनाओं से लाभान्वित होने वाले हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक श्रीमती राजश्री सिंह सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी सहित ग्रामीण जन मौजूद रहे।

सीएम ने लटेरी दुर्घटना में मृतकों के प्रति शोक संवेदनाएं व्यक्त की, मृतकों को 2-2 लाख और घायलों को 50-50 हजार की सहायता

सिरोंज। विदिशा जिले के लटेरी तहसील क्षेत्र में इंदौर से सिरोंज जा रही बस दुर्घटनाग्रस्त होने से चार लोगों की आकस्मिक मृत्यु हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दुरूख की इस घड़ी में सभी शोकाकुल परिजनों के प्रति शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं। घटना की जानकारी लगते ही कलेक्टर अंशुल गुप्ता और पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी सहित अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे और जिला प्रशासन की मदद से दुर्घटना में घायलों के उपचार की समुचित व्यवस्था की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मृतकों के परिजनों को मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान मद से 2.2 लाख एवं गंभीर रूप से घायलों को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता राशि प्रदान करने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर अंशुल गुप्ता और पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी लटेरी के समीप देर रात्रि में हुई दुर्घटना की सूचना मिलते ही रात्रि में ही घटना स्थल पर पहुंच गए थे। कलेक्टरए एसपी ने घायलों से संवाद कर घटना के संबंध में जानकारी प्राप्त की और गंभीर घायलों को समुचित इलाज हेतु त्वरित जिला चिकित्सालय भेजा गया है। लटेरी एसडीएम विनित तिवारी ने बताया कि इंदौर से सिरोंज आई बारात दुल्हन की विदाई के बाद गुरुवार की देर रात्रि में लटेरी और मकसूदनगढ़ के बीच 16 सीटर वाहन पलट जाने से घटित दुघर्टना में चार की मृत्यु हो गई है। आठ लोग गंभीर घायल बारातियों को इलाज हेतु जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। सामान्य घायलों की संख्या पांच है।

विधायक ने समस्या को दूर करने दिए थे निर्देश

बाजार में जाम की परेशानी दूर करने नपा ने लगाए बेरीकेड्स

कोटगेट ढाला में वाहन पार्किंग की तैयारी

सिरोंज, दोपहर मेट्रो

व्यापारियों की शिकायत तथा हमारे संवाददाता ने पिछले दिनों भी नगर के मुख्य बाजार में प्रतिदिन लग रहे जाम की समस्या को प्रमुखता से प्रकाशित किया था इसके उपरांत विधायक उमाकांत शर्मा ने व्यापारी और आमजन के हित में समस्या को दूर करने के लिए एसडीएम और सीएमओ के साथ बाजार भ्रमण करके निदान के निर्देश दिए थे व्यापारी भी लगातार जाम की समस्या दूर करने और वाहन पार्किंग की मांग करते आ रहे हैं । प्रशासन धरातल पर कदम उठाने के लिए काम करता नजर आ रहा है बड़े वाहनों के प्रवेश को रोकने के लिए वेरी बैरिकेट्स स्थापित किए गए हैं एवं दो स्थानों पर वाहन पार्किंग बनाने की तैयारी भी प्रारंभ कर दी है कोटगेट तथा ढाला बाजार बनाई जाएगी इसके लिए शनिवार को यहां से अवैध अतिक्रमण हटाने के लिए नगर पालिका परिषद करवाई करेगी। वहीं सभी की सुविधा मिले इस उदेश को लेकर एसडीएम हर्षल चौधरी ने नगर पालिका परिषद से धरातल पर कार्रवाई

करते हुए तीन स्थान कोर्ट गेट , ढाला बाजार कठली बाजार पर बैरिकेट्स स्थापित करवा दिए हैं। रात्रि 8 बजे तक भारी वाहनों का प्रवेश पूर्ण रूप से वर्जित रहेगा दो स्थानों पर वाहन पार्किंग की तैयारी प्रारंभ कर दी गई है । इसके लिए ढाला बाजार एवं कोटगेट पर अस्थाई वाहन पार्किंग बनाई जाएगी इसके लिए सबसे पहले यहां नगर पालिका परिषद को अवैध अतिक्रमण को हटाना होगा तब जाकर यहां पर अस्थाई रूप से वाहन पार्किंग का इंतजाम हो पाएगा अभी मुख्य बाजार में जाम के कारण आम से खास को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है । जबकि इन वाहनों के प्रवेश पर दिन के समय में प्रतिबंध होने के बाद लोडिंग ,अनलोडिंग तथा पानी सप्लाई करने वाली गाड़ियां सर पर दौड़ रही है जाम में मुख्य भूमिका यही निभाते हैं इनको रोकने टोकने वाला कोई बाजार में रहता नहीं है बाजार में खड़े होकर पानी उतरने का काम घंटे किया जाता है सामग्री उतरने वाले लोडिंग ऑटो भी ऐसे ही खड़े रहते हैं इनके भी बड़े परेशानी होती है। व्यापारियों का व्यापार थे इनकी वजह से प्रभावित हो रहा है। इस समय शादी विवाह की खरीदारी होने से बाजार में दो पहिया वाहन तो बड़ी मुश्किल से निकल रहे हैं पैदल चलने वाले राहगीरों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बाजार में वाहन पार्किंग के इंतजाम नहीं होने से दो पहिया वाहन चालक मुख्य बाजार में सड़क की दोनों तरफ अपने वाहनों को खड़ा करके बाजार में खरीदारी करने चले जाते हैं इस कारण से हालात और भी ज्यादा खराब हो जाते हैं। बैसे ही बाज़ार सकरा है इन वाहनों बाजार में खड़े होने से समस्या और बढ़ रही है। जाम की समस्या के निदान लिए व्यापारियों भी कई विधायक तथा प्रशासन से शिकायत कर चुके हैं । वहीं अब देखने वाली बात है कि नगर पालिका प्रशासन इस समस्या का स्थाई समाधान करेगी या फिर कुछ दिनों की व्यवस्था करके अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेगी।

बाजार से अतिक्रमाण भी हटे - मुख्य बाजार में कई व्यापारियों के द्वारा दुकानों के बाहर अवैध रूप से अतिक्रमण करके सामान को स्थापित कर दिया इसके कारण सकर बाज़ार और छोटा हो गया है उसके लिए नगर पालिका प्रशासन को जिन लोगों के द्वारा अवैध रूप से अतिक्रमण करके आवागमन को प्रभावित किया जा रहा है। इनके खिलाफ भी कार्रवाई की जाए या फिर इनको एक बार फिर समझे देकर इनके सामान को सीमा रेखा के अंदर करवाया जाए यदि ऐसा होता है तो और भी फायदा बाजार में दिखेगा अतिक्रमण से और समस्या बढ़ रही है इसको भी एक तरफ से हटाना होगा।

इनका कहना है

तीन पहिया चार पहिया वाहन का दिन के समय बाजार में प्रवेश वर्जित करने के लिए बैरिकेट्स स्थापित की है, दो स्थानों पर वाहन पार्किंग अस्थाई रूप से बना इसके लिए कोर्ट गेट और ढाला बाजार को चिन्हित के गए हैं।

-रामप्रकाश साहू
मुख्य नपा अधिकारी

मुख्यमंत्री मोहन यादव के नाम कलेक्टर गुप्ता को सौंपा ज्ञापन

सिरोंज, दोपहर मेट्रो

मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ के द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस 1 मई को पूरे मध्य प्रदेश में प्रांतीय अध्यक्ष दादा शलभ भदौरिया के निर्देश अनुसार प्रदेश की समस्त जिला इकाइयों के द्वारा जिला कलेक्टरों को मुख्यमंत्री के नाम 21 सूत्रीय ज्ञापन सोफा गया है इसी क्रम में विदिशा जिला इकाई के द्वारा कलेक्टर अंशुल गुप्ता को ज्ञापन दिया एवं पुलिस अधीक्षक रोहित कसवानी से भी सभी पत्रकारों द्वारा मुलाकात की गई विदिशा जिला इकाई के संभागीय पदाधिकारी योगेंद्र तोमर,एम जेड खान विदिशा जिला इकाई के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह भदोरिया एवं कार्यकारी अध्यक्ष योगेश पंथी , उपाध्यक्ष डॉक्टर शैलेंद्र कटारिया , उपाध्यक्ष शान मियां , उपाध्यक्ष रवि चौरसिया महासचिव हाकम सिंह रघुवंशी, सचिव मायावती अहिरवार ,विदिशा ब्लॉक अध्यक्ष आर के वासुदेव, उपाध्यक्ष कोमल प्रसाद रैकवार, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश नामदेव ,सचिव कोमल प्रसाद सेन, पठारी ब्लॉक अध्यक्ष चेतराम साहू लटेरी अध्यक्ष मुजीब खान, कुरवाई अध्यक्ष जफर शेख, गंजबासौदा नगर अध्यक्ष अभिनय श्रीवास्तव ,जाहिद अली, शमीम मंसूरी, अशोक रघुवंशी, राजकुमार अहिरवार आदि अनेक पत्रकार साथी पूरे जिले से आकर सम्मिलित हुए सभी साथियों के द्वारा ईदगाह चौराहा से होकर कलेक्टर कार्यालय पहुंचे एवं नारे भी लगाए गए।

एसबीआई क्षेत्रीय प्रबंधक ने लिया संज्ञान, जांच के लिए बनाया दल

सिरोंज, दोपहर मेट्रो

एसबीआई गल्ला मंडी के नाम से लिंक संचालित होने वाली शाखा में किसाने और ग्राहकों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। जिसका वीडियो वायरल हुआ था उसको हमारे संवाददाता ने उपभोक्ताओं के हित में 30 अप्रैल को प्रकाशित किया था जिसको एसबीआई क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय ने संज्ञाएं ते हुए लेते हुए जांच करके गलत व्यवहार करने वाले कर्मचारी पर कार्रवाई के लिए निर्देशित किया है। इसके बाद विदिशा स्टेट बैंक आर एम ने शाखा में कार्य करने वाले कर्मचारी की क्लास लेते यह कहा कि शाखा में आने वाले किसी भी उपभोक्ता के साथ गलत व्यवहार किया तो ठीक नहीं होगा सभी बैक कर्मचारी को व्यवहार ठीक करके के दिशा निर्देश जारी किए इसके बाद

शाखा में अभी कुछ सुधार देखने को मिल रहा है या फिर कहे जांच के डर से ऐसा हो रहा है। पहले जहां ग्राहकों को अंदर घुसने दिया था अब उनको कुर्सियों पर बिठला जा रहा है पानी की व्यवस्था की जा रही है। इसके अलावा गलत व्यवहार करने का जो वीडियो वायरल हुआ था उसकी जांच करवाई स्टेट बैंक मैनेजर से करवाई जा रही है। हमारे संवाददाता ने ग्राहकों के साथ गलत व्यापार करने के मामले प्रकाशित किया था । जिसमें बैंक के कुछ कर्मचारी ग्राहकों के साथ गलत व्यवहार करते हुए सांप तोर से नजर आ रहे हैं। जबकि ग्राहकों के लेन-देन से ही बैंक काम करने वाले स्टाफ को वेतन मिलता है स्टॉप इस बात को बात को भूल जाता है और अपने आप को बैंक का मालिक समझने लगते है।

मेट्रो एंकर ग्रीष्म अवकाश में वॉलेंटियर के रूप में 2000 युवा स्वेच्छा से बच्चों को पढ़ा रहे, गांव-गांव में पढ़ रहे बच्चे

कलेक्टर की अभिनव पहल - समर कैंप में बच्चे खेल-खेल में कर रहे पढ़ाई

सिरोंज, दोपहर मेट्रो

विदिशा बच्चों ने साल भर स्कूल में जो सीखा है वह ग्रीष्म अवकाश के दौरान भूल न जाए और पढ़ाई से जुड़े रहें, यह सुनिश्चित करने के लिए कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने अभिनव पहल की है। इसके लिए प्रथम एनजीओ के माध्यम से समर कैंप का आयोजन संपूर्ण जिले के सभी ग्रामों में किया जा रहा है। समर कैंप में बच्चों को ग्राम के ही पढ़े लिखे नौजवान बच्चों की सुविधा अनुसार समय एवं स्थान का निर्धारण कर खेल एवं अन्य गतिविधियों के साथ पढ़ाई भी कराते है। यह कार्य उनके द्वारा वॉलेंटियर के

रूप में निःशुल्क स्वेच्छा से किया जा रहा है।

जिले में लगभग 2000 वॉलेंटियर एक लाख बच्चों को इस प्रकार शिक्षा से ग्रीष्म अवकाश के दौरान जोड़े हुए हैं। डीपीसी आरपी लखेर ने बताया कि सबसे पहले 25 अप्रैल को डाइट में जिले के सभी सीएसी को प्रथम संस्था द्वारा प्रशिक्षित किया गया तथा समर कैंप ऐप इंस्टॉल कर कर उपयोग करना बताया गया। सीएसी द्वारा जिले के सभी शिक्षकों को जनशिक्षा केंद्र पर प्रशिक्षित किया गया। शिक्षकों ने प्रत्येक ग्राम में वॉलेंटियर तलाश कर उन्हें प्रशिक्षण दिया और अब यही वॉलेंटियर अवकाश के दौरान शिक्षा की अलख जगाए हुए हैं।

11 के बाद नहीं खुलेगा बाजार, कलेक्टर ने जारी किया आदेश, जरूरी सेवाएं नहीं हगी प्रभावित

सिरोंज। कलेक्टर अंशुल गुप्ता ने 163 का आदेश एसपी के पत्र पर जारी किया है ।इसके चलते 11 बंद करने का आदेश सभी एसडीएम ओ को भेज दिया गया है ।उसके पालन की जिम्मेदारी भी इनको दी गई है साथ थाना प्रभारी पंकज गीते मैं भी व्यापारियों को उसके संबंध में बता दिया है। धार्मिक ,राजनीतिक आ जलसा जुलूस रैली आदि कार्यक्रमों लीव ए गाइडलाइन जारी की है कल 12 बिंदु का आदेश जारी हुआ है। इसके किसी भी तरह की सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाओं को प्रभावित करने वाली पोस्ट डालना और फॉरवर्ड करने पर भी रोक लगाई है। आदेश का उल्लंघन कोई करता है उस पर तो कार्रवाई की जाएंगी । एसडीएम हर्षल चौधरी ने बताया कलेक्टर महोदय के आदेश का पालन करवाएंगे उन्होंने आम आदमी की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए बाजार रात्रि 11 बजे बंद करने के लिए आदेश जारी किया है । इसमें इमरजेंसी एजेंसी सेवाओं मेडिकलों को छोड़कर अन्य दुकानें संचालित नहीं होगी धार्मिक कार्यक्रम, जलसों जुलूस ,राजनीतिक आदि कार्यक्रम बग़ैर अनुमति के नहीं होंगे इसके लिए एसडीएम से अनुमति लेनी होगी उसकी पूरी जानकारी उपलब्ध करनी होगी इसके अलावा होटल ढाबा एवं किराएदारों की जानकारी के संबंध में भी आदेश जारी किया है। रात्रि 11 बजे के बाद असामाजिक तत्व तथा नशा करने वाले लोग घूमते हैं इनके खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई शुरू कर दी है।

घरेलू सर्किट में अच्छा प्रदर्शन अजिंक्य, आईपीएल में केकेआर के लिए भी लगा रहे खूब जोर

भारतीय टीम में वापसी के लिए अब भी उत्सुक हैं रहाणे, बोले- भूख और जुनून बाकी है

एजेंसी, नई दिल्ली

आईपीएल में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की कप्तानी कर रहे अजिंक्य रहाणे ने भारतीय टीम में वापसी की उम्मीद नहीं छोड़ी है। रहाणे का कहना है कि वह राष्ट्रीय टीम में वापसी को लेकर उत्सुक हैं क्योंकि उनमें अभी भी रन बनाने की भूख और जुनून बाकी है। रहाणे एक समय में भारतीय टेस्ट टीम के उपकप्तान थे, लेकिन उन्होंने देश के लिए आखिरी बार 2023 में वेस्टइंडीज दौरे पर मुकाबला खेला था।

घरेलू क्रिकेट में दिखाया है दम - रहाणे घरेलू सर्किट में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और आईपीएल 2025 में केकेआर के लिए उन्होंने दम दिखाया है। रहाणे मौजूदा आईपीएल सीजन में 10 मैचों में 297 रन बना चुके हैं। रहाणे ने कहा कि उनके अंदर भारतीय टीम के लिए भूख, इच्छा और जुनून अभी भी बाकी है। रहाणे के लिए गौरव का सबसे बड़ा क्षण शायद 2020-21 का ऑस्ट्रेलिया दौरा था जिसमें उन्होंने चोटों से जूझ रही टीम का नेतृत्व करते हुए भारत को टेस्ट सीरीज में 2-1 से जीत दिलाई थी।

क्रिकेट का आनंद ले रहे हैं रहाणे

रहाणे ने एक स्पोर्ट्स चैनल से कहा, हां, मैं फिर से भारतीय टीम में जगह बनाना चाहता हूं। मेरी इच्छा, भूख, जज्बा पहले की तरह बरकरार है। मैं अब भी पहले की तरह फिट हूं। मैं एक समय में केवल एक मैच पर ध्यान देना चाहता हूं और अभी मेरा ध्यान केवल आईपीएल पर है। इसके बाद देखते हैं कि भविष्य में क्या होता है। मैं ऐसा व्यक्ति हूं जो कभी हार नहीं मानता। मैं हमेशा मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करता हूं। मैं मैदान पर 100 प्रतिशत से अधिक देता हूं। यह उन चीजों से जुड़ा है जो मेरे नियंत्रण में हैं। मैं घरेलू क्रिकेट भी खेल रहा हूं और इस समय मैं वास्तव में अपने क्रिकेट का आनंद ले रहा हूं।

रहाणे ने 2011 में किया था डेब्यू

रहाणे ने 2011 में डेब्यू किया था और वह तीनों प्रारूप मिलाकर भारत के लिए 195 मैच खेल चुके हैं। रहाणे ने भारत के लिए खेलते हुए 8414 रन बनाए हैं। रहाणे के नेतृत्व में केकेआर की टीम खिताब का बचाव करने उतरी है और अभी प्लेऑफ की दौड़ में बरकरार है। उन्होंने कहा, हर सुबह जब मैं उठता हूं तो यही सोचता रहता हूं कि मैं कौन से लक्ष्य हासिल करना चाहता हूं। मेरे लिए अपने देश का प्रतिनिधित्व करने से बढ़कर कुछ नहीं है। मैं फिर से भारतीय जर्सी पहनना चाहता हूं। जब कोई टूर्नामेंट नहीं चल रहा होता है तो मैं एक दिन में दो से तीन सत्र तक अभ्यास करता हूं। मुझे लगता है कि अभी मेरे लिए खुद को फिट रखना वास्तव में काफी महत्वपूर्ण है।

टीम बाहर हो चुकी, लेकिन अपने गुणगान में जुटे आरआर के कोच

राहुल द्रविड़ बोले-हमारी टीम युवा खिलाड़ियों को बनाती है सुपरस्टार

एजेंसी, जयपुर

आईपीएल 2025 में राजस्थान रॉयल्स की टीम प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है। मुंबई के खिलाफ हार के साथ ही टीम के प्लेऑफ में जगह बनाने की उम्मीदें समाप्त हो गईं। हालांकि, टीम के फील्डिंग कोच दिशांत याग्निक अपने और अपनी टीम के गुणगान में जुटे हैं। याग्निक ने कहा कि मेगा नीलामी से पहले जोस बटलर और ट्रेंट बोल्ट जैसे सुपरस्टार को रिलीज करने की आलोचना के बावजूद उनकी टीम युवाओं का समर्थन करना जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि हमारी टीम युवा खिलाड़ियों को सुपरस्टार बनाती है।

राजस्थान को खल रही बटलर-बोल्ट की कमी

राजस्थान रॉयल्स के 11 मैचों में केवल छह अंक हैं और वह अंक तालिका में आठवें स्थान पर है। मुंबई इंडियंस ने गुरुवार को आरआर को 100 रन से हराया। रॉयल्स की टीम में कई युवा खिलाड़ी हैं जिनमें आईपीएल में सबसे कम उम्र में शतक लगाने वाले 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी और सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल भी शामिल हैं, लेकिन इस टीम को इंग्लैंड के सीमित ओवरों के पूर्व कप्तान बटलर और न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज बोल्ट की बड़ी कमी खल रही है।

पिछले साल और इस साल में टीम में अंतर

याग्निक से जब पिछले साल की टीम और इस साल की टीम के बीच अंतर के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, स्टार (खिलाड़ियों) के बारे में आपके प्रश्न में एक बड़ा मुद्दा है। जब भी कोई नया खिलाड़ी आता है, तो वह स्टार नहीं होता है, लेकिन उसे स्टार बनाया जाता है। पिछले साल हमारे पास जो खिलाड़ी थे, जब वे टीम में आए तो वे स्टार नहीं थे, लेकिन वे स्टार बन गए और अब जो खिलाड़ी हमारी टीम में हैं, हम उन्हें स्टार बनाएंगे। हम सुपरस्टार खरीदते नहीं हैं, हम सुपरस्टार बनाते हैं और यही हमारा मुख्य उद्देश्य है।

आने वाले समय में स्टार बन जाएंगे ये खिलाड़ी

रॉयल्स पिछले साल 14 मैचों में 17 अंकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर रहते हुए प्लेऑफ में जगह बनाई थी। मुंबई इंडियंस के खिलाफ सलामी बल्लेबाज वैभव खाता भी नहीं खोल पाए, जबकि जायसवाल ने 13 रन बनाए। रॉयल्स की टीम 218 रन का पीछा करते हुए 117 रन पर आउट हो गई। याग्निक ने कहा, वैभव सूर्यवंशी को देखिए, जब वह गुजरात के खिलाफ बल्लेबाजी कर रहे थे तो हर कोई खुश था। दर्शक खुश थे और हमें पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में ये खिलाड़ी स्टार बन जाएंगे।

इसी टीम को आगे बढ़ाएंगे और जीतकर दिखाएंगे

उन्होंने कहा, समय आ गया है कि आप इससे आगे की सोचें। जब आपके पास स्टार खिलाड़ी नहीं है, तो आपको इसे भूल जाना होगा और आगे बढ़ना होगा। हमारे पास वैभव, यशस्वी जायसवाल हैं। संजू सैमसन हमारे कप्तान हैं। हम इस टीम के साथ आगे बढ़ेंगे और जीतकर दिखाएंगे। वैभव ने गुजरात के खिलाफ 38 गेंद में 101 रन की पारी खेली थी। इस दौरान उन्होंने सात चौके और 11 छक्के लगाए थे।

बुमराह-बोल्ट के साथ काम करके आसानी हो रही

इस बीच मुंबई इंडियंस के तेज गेंदबाज दीपक चाहर ने स्वीकार किया कि जसप्रीत बुमराह और ट्रेंट बोल्ट जैसे विश्व स्तरीय गेंदबाजों के साथ गेंदबाजी करने से उनका काम आसान हो जाता है। उन्होंने कहा, जब आप विश्व स्तरीय गेंदबाजों के साथ गेंदबाजी कर रहे होते हैं तो आपके लिए काम आसान हो जाता है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले विश्व स्तरीय गेंदबाजों के साथ गेंदबाजी करने से मुझे मदद मिल रही है और जब आप एक इकाई के रूप में गेंदबाजी करते हैं, तो दूसरी टीम के लिए भी यह मुश्किल हो जाता है।

आज आरसीबी बनाम सीएसके: चिन्नास्वामी स्टेडियम में दोनों टीमों का रिकॉर्ड बराबर

जीत के साथ टॉप पर पहुंचेगी बेंगलुरु, चेन्नई सबसे फिसड्डी 10 वे नंबर पर

एजेंसी, बेंगलुरु

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 52वें मैच में आज रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का सामना चेन्नई सुपर किंग्स से होगा। मैच बेंगलुरु के होम ग्राउंड एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में शाम 7:30 बजे से खेला जाएगा। दोनों टीमें इस सीजन में दूसरी बार आमने-सामने होंगी। पिछले मैच में आरसीबी ने सीएसके को उसी के होम ग्राउंड पर 50 रन से हराया था। आरसीबी पॉइंट्स टेबल में 14 पॉइंट्स के साथ दूसरे नंबर पर काबिज हैं। टीम आज का मैच जीतकर टॉप पर आ जाएगी और प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई करने के करीब पहुंच जाएगी। वहीं, सीएसके 4 अंकों के साथ 10वें स्थान पर है और प्लेऑफ की रेस से बाहर हो चुकी है।

हेडटु हेड में चेन्नई, बेंगलुरु पर भारी है। दोनों के बीच अब तक 35 आईपीएल मैच खेले गए हैं। इनमें से 22 मैच में चेन्नई और 12 में बेंगलुरु ने जीत दर्ज की। एक मैच का रिजल्ट नहीं निकल सका। वहीं, दोनों टीमें एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में 11 बार भिड़ीं हैं, 5 में चेन्नई और 5 में ही बेंगलुरु को जीत मिली। वहीं, एक मैच का नतीजा नहीं निकल सका।

आरसीबी के पिछले मैच में 2 अर्धशतक लगे थे- आरसीबी के पिछले मैच में दो अर्धशतक लगे थे। विराट कोहली ने 51 और क्रुणाल पंड्या ने नाबाद 73 रन बनाए थे। टीम में लियम लिविंगस्टन, जितेश शर्मा और क्रुणाल पंड्या जैसे टी-20 स्पेशलिस्ट मौजूद हैं। पेसर जोश हेजलवुड टीम के टॉप विकेट टेकर हैं। उन्होंने 10 मैचों में 18 विकेट झटके हैं।

नूर सीएसके के टॉप विकेट टेकर

चेन्नई पिछले तीन मैच लगातार हारी है। स्पिनर नूर अहमद 15 विकेट लेकर टीम के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले बॉलर हैं। बैटिंग में शिवम दूबे टीम के टॉप स्कोरर हैं। शिवम ने 10 मैचों में 248 रन बनाए हैं।

पिच रिपोर्ट

बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के लिए मददगार साबित होगी है। वहीं स्पिनर्स को इस पिच पर थोड़ी मदद मिलती है। इस स्टेडियम में अब तक आईपीएल के 99 मैच खेले गए। पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम ने 42 और चेज करने वाली टीम ने 53 मैच जीते। जबकि चार मैचों के रिजल्ट नहीं निकल सके। ऐसे में टॉस जीतने वाली टीम चेज करना पसंद करेगी। यहां का हाईएस्ट टीम स्कोर 287/3 है, जो सनराइजर्स हैदराबाद ने पिछले सीजन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ बनाया था।

वेदर कंडीशन

शनिवार को बेंगलुरु का मौसम ठीक नहीं रहेगा। दोपहर में कुछ देर धूप खिलेगी, फिर बादल छा जाएंगे और कुछ स्थानों पर बारिश (55त्न) की आशंका है। मैच वाले दिन यहां का टेम्प्रेचर 22 से 34 डिग्री सेल्सियस रहेगा। वहीं हवा 13 किलो मीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से चलेगी।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु

रजत पाटीदार (कप्तान), जैकब बेथेल, विराट कोहली, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), क्रुणाल पंड्या, रोमारियो शेफर्ड, टिम डेविड, भुवनेश्वर कुमार, जोश हेजलवुड, यश दयाल. सुयश शर्मा, देवदत्त पडिक्कल।

चेन्नई सुपर किंग्स

महेंद्र सिंह धोनी (कप्तान और विकेटकीपर), शेख रशीद, आयुष म्हात्रे, सैम करन, रवींद्र जड़ेजा, डेवाल्ड ब्रेविस, शिवम दुबे, दीपक हुड्डा, खलील अहमद, नूर अहमद, मथीशा पथिराना, अंशुल कंबोज।

टी20 में सबसे तेजी से 2000 रन पूरे करने वाले भारतीय बने साई सुदर्शन

अहमदाबाद। गुजरात टाइटंस के सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ शानदार प्रदर्शन करते हुए एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। सुदर्शन टी20 में सबसे तेजी से 2000 रन पूरे करने वाले भारतीय बन गए हैं। उन्होंने इस मामले में भारत के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ दिया है। सुदर्शन इस आईपीएल सीजन शानदार फॉर्म में चल रहे हैं और उन्होंने एक बार फिर शुभमन गिल के साथ मिलकर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई है। सुदर्शन ओवरऑल दूसरे ऐसे बल्लेबाज हैं जिन्होंने टी20 में सबसे तेजी से 2000 रन पूरे किए हैं। सुदर्शन ने 54 पारियों में ऐसा किया। उनसे आगे सिर्फ शॉन मार्श हैं जिन्होंने 53 पारियों में टी20 में 2000 रन पूरे किए थे। ब्रैड हॉग, मार्कस ट्रेसकोथिक और मोहम्मद वसीम ने 58 गेंदों पर ऐसा किया है, जबकि सचिन तेंदुलकर ने 59 गेंदों पर टी20 में 2000 रन पूरे किए थे। भारतीयों में अब सुदर्शन सचिन से आगे निकल गए हैं।

मनोरंजन **बॉलीवुड का कोना**

फैन की गुजारिश पर भड़के थे सोनू निगम, अब फंस गए मुश्किलों में उठी सजा की मांग

बेंगलुरु कॉन्सर्ट में कही अपनी बात के चलते सोनू निगम मुश्किलों में फंस गए हैं। बेंगलुरु के कन्नड़ समर्थक संगठन, कर्नाटक रक्षणा वेदिके ने सिंगर के खिलाफ कानूनी एक्शन की मांग की है। संगठन का कहना है कि सोनू निगम का बयान भड़काऊ और समुदायों के बीच विभाजनकारी है। ऐसे में संगठन के मुखिया धर्मराज ने अवलहल्ली पुलिस स्टेशन में लिखित शिकायत भी दर्ज करवाई है। अपनी शिकायत में धर्मराज ने सिंगर सोनू निगम पर कन्नड़ लोगों का अपमान करने और भाषाई समूहों के बीच नफरत भड़काने का आरोप लगाया है। उन्होंने लिखा कि वो ये शिकायत सोनू निगम के खिलाफ 25 और 26 अप्रैल को बेंगलुरु के ईस्ट पॉइंट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेकनोलॉजी में दिए भड़काऊ बयान के चलते दर्ज करवा रहे हैं। लिखा गया है, सोनू के बयान ने कन्नड़ समाज की भावनाएं को गहरी ठेस पहुंचाई है, कर्नाटक में विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच नफरत भड़काई है और इससे हिंसा भड़कने की संभावना है। बता दें कि सोनू निगम के बयान का एक वीडियो वायरल हो गया है, जिससे राज्य के कन्नड़ लोगों में आक्रोश फैल गया है। शिकायत में आगे लिखा गया है कि कॉन्सर्ट के दौरान एक स्टूडेंट ने सोनू निगम से कन्नड़ भाषा में गाना गाने को कहा था। इसके जवाब में सिंगर ने आपत्तिजनक बयान देते हुए कहा कि कन्नड़, कन्नड़, कन्नड़, इसीलिए पहलगाम में वो हादसा हुआ है।

मेट्रो बाजार

सेबी ने कहा- एसबी एनर्जी खरीदने की जानकारी लीक की

मुंबई। अडाणी ग्रुप के चैयरमेन गौतम अडाणी के भतीजे प्रणव पर इनसाइडर ट्रेडिंग के नियमों का उल्लंघन करने के आरोप लगे हैं। रॉयटर्स के अनुसार सेबी ने प्रणव अडाणी पर मई 2021 में अडाणी ग्रीन की एसबी एनर्जी को खरीदने की गुप्त जानकारी लीक करने आरोप लगाया है। प्रणव ने एसबी एनर्जी को खरीदने की डील की इन्फॉर्मेशन ब्रदर इन-लॉ कुणाल शाह और उनके भाई नृपाल शाह के साथ शेयर की थी। शाह ब्रदर्स ने इस इन्फॉर्मेशन का फायदा उठाकर 90 लाख रुपए का मुनाफा कमाया था।

मामले में सेबी ने कहा कि कॉल रिकॉर्ड्स और ट्रेडिंग पैटर्न से पता चला कि 16 मई 2021 को एसबी एनर्जी को खरीदने की डील से 2-3 दिन पहले जानकारी लीक हुई। इसके जवाब में प्रणव ने रायटर्स से कहा की वे आरोपों को स्वीकार नहीं करते हैं। उन्होंने कहा मैंने कोई कानून नहीं तोड़ा। आरोप न मानते हुए भी सेटलमेंट चाहते हैं, ताकि मामला खत्म हो। वहीं, शाह बंधुओं के वकील ने कहा, ट्रेड्स सार्वजनिक जानकारी के आधार पर हुए। इसमें कोई गलत इरादा नहीं था।

अडाणी ग्रीन ने एसबी एनर्जी को 3.5 अरब डॉलर (करीब 30,000 करोड़ रुपए) में खरीदकर भारत के रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर की सबसे बड़ी डील की थी। प्रणव पर इसी डील की जानकारी लीक करने के आरोप हैं। नवंबर 2024 में अडाणी समेत 8 लोगों पर सरकारी अधिकारियों को 250 मिलियन डॉलर यानी करीब 2,029 करोड़ रुपए की रिश्वत देने का आरोप लगाया गया था।

गौतम अडाणी के भतीजे प्रणव पर इनसाइडर ट्रेडिंग का आरोप

रेड 2 ने अजय को बनाया सीक्वल किंग, पहली फिल्म से दोगुनी ओपनिंग, फ्रैंचाइजी फिल्मों में है दमदार रिकॉर्ड

अजय देवगन की फिल्म रेड 2 थिएटर्स में पहुंचते ही भौकाल जमाने लगी है। इस फिल्म के टीजर और ट्रेलर को जनता से काफी पॉजिटिव रिस्पॉन्स मिला था। अब फिल्म को भी जैसा रिस्पॉन्स मिल रहा है, वो बताता है कि ऑडियंस को अजय पर कितना भरोसा है। रेड 2 ने पहले दिन ऐसी ओपनिंग की है जिसकी उम्मीद किसी को नहीं थी। 2018 में आई ऑरिजिनल रेड के मुकाबले, इसके सीक्वल का ओपनिंग कलेक्शन लगभग दोगुना हुआ है। नई फिल्म की ओपनिंग ने एक बार फिर से साबित कर दिया है कि अजय देवगन सीक्वल फिल्मों के किंग हैं। आइए बताते हैं कैसे।।। अजय की लेटेस्ट फिल्म ने पहले ही दिन थिएटर्स में 19।71 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। रेड 2 ने छावा और सिकंदर के बाद, 2025 में बॉलीवुड की तीसरी सबसे बड़ी ओपनिंग की है। लॉकडाउन के बाद अजय की दो बड़ी हिट्स दृश्यम 2 और शैतान की ओपनिंग 15 करोड़ रुपये के करीब थी। अजय देवगन की सबसे बड़ी हिट्स में से एक तानाजी लॉकडाउन से पहले रिलीज हुई थी और इसने भी 15 करोड़ की रेंज में ओपनिंग कलेक्शन किया था। अब रेड 2 की ओपनिंग ने इन सभी फिल्मों को पीछे छोड़ दिया है।

अजय ने बन चुके हैं सीक्वल के किंग

आज बॉलीवुड में किसी भी ए-लिस्ट स्टार के पास अजय देवगन जितनी फ्रैंचाइजी फिल्में नहीं हैं। अजय की कामयाबी इस बात में है कि उनकी फ्रैंचाइजी फिल्मों की कमाई भी बढ़ती चली जाती है। इसका एक सबूत इन फिल्मों के ओपनिंग कलेक्शन हैं। अजय ने 2006 में पहली गोलमाल फिल्म की थी जिसकी ओपनिंग 2.32 करोड़ थी। 2008 में इसके सीक्वल की ओपनिंग दोगुने से ज्यादा बढ़कर 5.89 करोड़ रही थी। इस फ्रैंचाइजी की आखिरी फिल्म गोलमाल अगेन (2017) का ओपनिंग कलेक्शन 30 करोड़ से ज्यादा था। बॉलीवुड के मॉडर्न इतिहास में अजय उन शुरुआती ए-लिस्ट स्टार्स में से हैं जिन्होंने सीक्वल फिल्मों की वैल्यू को समझा और इसीलिए अज उनके नाम चार बड़ी कामयाब फ्रैंचाइजी हैं- गोलमाल, सिंघम, दृश्यम और रेड। हर फ्रैंचाइजी में अजय की नई फिल्म, पिछली फिल्म से आगे निकलती है और इस तरह उनके पास हर साल बॉक्स ऑफिस पर परफॉरमेंस की गारंटी देने वाला एक प्रोडक्ट मौजूद रहता है। इससे अजय पर बॉक्स ऑफिस सक्सेस वाला प्रेशर कम आता है और वो हर साल कुछ नई कहानियां ट्राई कर पाते हैं। एक खास बात ये भी है की अजय के मामले में जनता का भरोसा भी काम करता है।

अमेरिका में बिक रहे 50 फीसदी आईफोन मेड इन इंडिया : टिम कुक

मुंबई। एपल के सीईओ टिम कुक ने हाल ही दिए एक इंटरव्यू में बताया है कि अमेरिकी बाजार में बिकने वाले 50 फीसदी आईफोन भारत में बन रहे हैं। कुक ने कहा कि भारत अप्रैल-जून तिमाही में अमेरिका में बिकने वाले आईफोन्स का कंट्री ऑफ ओरिजिन बन जाएगा। उन्होंने बताया कि एयरपॉड्स, एपल वॉच जैसे अन्य प्रोडक्ट्स भी ज्यादातर वियतनाम में बनाए जा रहे हैं। कंपनी चाइना के मुकाबले कम टैरिफ की वजह से भारत और वियतनाम को प्राथमिकता दे रही है। चीन में ज्यादा टैरिफ के मुकाबले भारत और वियतनाम से इंपोर्ट पर सिर्फ 10त्न टैक्स है। यह फैसला ऐसे वक्त में लिया गया है, जब अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड वॉर तेज हुआ है। ट्रंप के रेसिप्रोकल टैरिफ के बाद एपल को चीन पर निर्भरता कम करनी पड़ी। हालांकि, कुक ने दावा किया कि मार्च तिमाही में एपल पर इसका सीमित असर पड़ा, क्योंकि कंपनी ने सप्लाई चेन को तेजी से भारत और वियतनाम शिफ्ट किया है। फाइनेंशियल टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार चीन पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए एपल काफी समय से अपनी सप्लाई चेन को वहां से बाहर शिफ्ट करने पर काम कर रही है। एपल अगर अपनी असेंबलिंग भारत की ओर इस साल के आखिर तक शिफ्ट कर लेती है, तो 2026 से यहां सालाना 6 करोड़ से ज्यादा आईफोन का प्रोडक्शन होगा। ये मौजूदा कैपेसिटी से दोगुना है।

इलेक्ट्रिक रिक्शा समेत कई दोपहिया वाहन चोरी

भोपाल। शहर में वाहन चोरी का सिलसिला जारी है। पिछले चौबीस घंटे के भीतर अलग-अलग इलाकों से बदमाश इलेक्ट्रिक रिक्शा समेत कई दोपहिया वाहन चोरी कर ले गए। पुलिस के मुताबिक गौतम नगर थानांतर्गत अटल अयूब नगर में रहने वाले असलम सैफी के घर के सामने खड़ा इलेक्ट्रिक आटो चोरी चला गया। इसी प्रकार कमला नगर स्थित कोटरा सुल्तानाबाद से अजय विश्वकर्मा, सिंधी कालोनी हनुमानगंज से तरन्नुम खान, शाहपुरा सी-सेक्टर चूनाभट्टी से अर्पण जैन, निशातपुरा से दीपेश जाटव और बिलखिरिया स्थित पीरिया चौराहे से महेश कुमार नागवंशी की बाइक चोरी चली गई। पुलिस ने सभी मामलों में अज्ञात वाहन चोरों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

जिलाबदर बदमाश चढ़ा पुलिस के हत्थे

भोपाल। शाहजहांनाबाद पुलिस ने एक जिलाबदर बदमाश को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक शारुख उर्फ बच्चा (25) निवासी शाहजहांनाबाद के खिलाफ जिलाबदर की कार्रवाई की गई थी। बुधवार को वह भोपाल टाकीज चौराहे पर घूमता हुआ मिला, जिसे मुखबिर से सूचना मिलने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी के खिलाफ रासुका के तहत कार्रवाई की गई है। इधर मिसरोद पुलिस ने बंगरसिया के पास भगवान सिंह परमार निवासी मंडीदीप और कटारा हिल्स पुलिस ने झागरिया हाइवे के पास मनोज अहिरवार को अवैध शराब के साथ गिरफ्तार किया है। दोनों के पास से करीब साढ़े चार हजार रुपए कीमत की अवैध शराब जब्त हुई है। आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है।

युवती को डिजिटल अरेस्ट करने वाला आरोपी गिरफ्तार कानपुर से पकड़ा, मोबाइल फोन बरामद

भोपाल। राजधानी की एक युवती को डिजिटल अरेस्ट कर 90 हजार रुपए की ठगी करने वाले मुख्य आरोपी को सायबर क्राइम ब्रांच की टीम ने कानुपर से गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से एक मोबाइल फोन और आधा दर्जन सिमकार्ड बरामद किए गए हैं। आरोपी महज आठवीं कक्षा पास है और पिछले करीब पांच सालों से लोगों के साथ ठगी की घटनाओं को अंजाम दे रहा था। जानकारी के अनुसार इस मामले की शिकायत सुकन्या सिंह (परिवर्तित नाम) ने सायबर क्राइम ब्रांच में की थी। सुकन्या ने शिकायत में बताया कि बीती पांच मार्च 2025 को अज्ञात व्यक्ति ने दिल्ली क्राइम ब्रांच का पुलिस अधिकारी बनकर उन्हें फोन किया और डिजिटल अरेस्ट कर फर्जी केस में फंसाने की धमकी दी। उसने मामले को खत्म करने, वकील, जज और गारंटरों को पैसे देने के नाम पर उनसे 90 हजार पांच सौ रुपए ठग लिए। इस शिकायत के आधार पर पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया था। जांच के दौरान पुलिस ने तकनीकी एनालिसिस के आधार पर अपराध में उपयोग किए गए मोबाइल की कॉल डिटेल निकाली। उसके बाद शातिर अपराधी और डिजिटल अरेस्ट के मुख्य आरोपी आजाद पुत्र भूरी (38) निवासी ग्राम राठीगांव, थाना रेऊना जिला कानपुर उत्तर प्रदेश का पता चला। सायबर क्राइम ब्रांच की एक टीम ने कानपुर पहुंचकर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

सोना गिरवी रखने का झांसा देकर कंपनी को लगाई लाखों की चपत शिकायत के बाद केस दर्ज

भोपाल। शाहपुरा थाना पुलिस ने एक प्रायवेट कंपनी के कर्मचारी की रिपोर्ट पर एक व्यक्ति के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। आरोपी ने कंपनी में सोना गिरवी रखने का झांसा देकर एडवांस में चैक ले लिया और उसे कैश करवा कर गायब हो गया। आरोपी की तलाश में पुलिस टीम लगाई गई है। जानकारी के अनुसार फरियादी बसंत देशपांडे, रोहित नगर शाहपुरा स्थित एक निजी कंपनी में नौकरी करते हैं। उनकी कंपनी सोना गिरवी रखकर लोन देने का काम करती है। उनकी कंपनी में राकेश नामक एक व्यक्ति का आना-जाना था। वह पूर्व में सोना गिरवी रखकर लोन ले चुका था। करीब चार महीने पहले राकेश कंपनी के कार्यालय पहुंचा और बताया कि उसने कुछ सोना टीटी नगर स्थित एक कंपनी में गिरवी रखा हुआ है। उसका कहना था कि आपकी कंपनी ज्यादा लाभ दे तो वह अपना सोना उस कंपनी से निकाल कर इस कंपनी में गिरवी रख सकता है। कंपनी के कर्मचारियों ने उसका प्रपोजल मुख्यायल भेजा तो वह मंजूर कर लिया गया। उसके बाद राकेश ने कंपनी से एडवांस में चैक ले लिया और मोबाइल बंद कर गायब हो गया।

दोस्त की बाइक लेकर निकला था युवक

गुमशुदा बीटेक छात्र का बड़े तालाब में मिला शव, नहीं मिला सुसाइड नोट

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

कोहेफिजा थाना क्षेत्र स्थित खानूगांव में बागो बहार शादी हॉल वाली सड़क पर तालाब में शुक्रवार सुबह गुमशुदा बीटेक छात्र की लाश मिलने से सनसनी फैल गई। छात्र गत 30 अप्रैल से लापता था और उसकी गुमशुदगी परवलिया सड़क थाने में दर्ज कराई गई थी। छात्र के पास से सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस के अनुसार शुशांत खलको पिता उन्फेस खलको (21) मूलतः गायत्री नगर, अंबेडकर कॉलोनी, कटनी में रहता था। इन दिनों वह वह परवलिया सड़क इलाके में अपने दोस्त दीपक के साथ किराए के कमरे में रह रहा था और भानपुर स्थित निजी कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। गत 30 अप्रैल की दोपहर वह दीपक की बाइक लेकर कमरे से निकला था। इसके बाद वह नहीं लौटा। दीपक ने घटना की जानकारी परिजन को दी। परिजन ने उसके मोबाइल पर कॉल किया, लेकिन उससे संपर्क नहीं हो सका। लिहाजा पिता कटनी से भोपाल पहुंचे और उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई। परिजन और पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। इस दौरान कोहेफिजा पुलिस को सूचना मिली कि खानूगांव में बागो बहार शादी हॉल वाली सड़क पर तालाब में किसी युवक की लाश पानी में पड़ी है।

पुलिस ने गोताखोंरों की मदद से बाहर निकाला शव

सूचना पर पहुंची पुलिस को तालाब से कुछ दूरी पर सड़क पर एक बाइक भी खड़ी नजर आई। पुलिस ने गोताखोरों की मदद से लाश बाहर निकाली। पुलिस ने बाइक के नंबर के आधार पर मालिक का पता लगाया तो पता चला कि उक्त बाइक शुशांत के दोस्त दीपक के नाम पर रजिस्टर्ड है। दीपक से संपर्क करने के बाद परिजन को बुलाया गया। परिजन ने मृतक की पहचान कर ली। तलाशी लेने पर शुशांत के पास से मोबाइल भी मिला था। पुलिस मोबाइल की सीडीआर निकलवा रही है।

बेटे के गुम होने के बाद भोपाल में ही थे परिजन

पुलिस का कहना है कि शव पीएम के बाद परिजन को सौंप दिया गया है। दरअसल, शुशांत के गुम होने के बाद कटनी से परिवार भोपाल आ गया था और शुशांत के नाना नानी के निशातपुरा स्थित मकान में रुका हुआ था। परिजन से पूछताछ में पता चला कि शुशांत ने किसी तरह की परेशानी का जिक्र नहीं किया था। वह गुमशुम जरूर रहता था। आत्महत्या के कारण का पता लगाने पुलिस कॉलेज में साथ पढ़ने वाले शुशांत के दोस्तों से पूछताछ करेगी।

गांव सरवर जोड़ के पास रात की घटना, पेशाब करने रुकवाई थी पुलिस से गाड़ी

फरहान को ले जा रही थी पुलिस, रास्ते में एसआई से पिस्टल छीनी, लगी पैर में गोली

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

छात्राओं से दुष्कर्म, यौन उत्पीड़न और ब्लैकमेलिंग करते हुए धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने वाले मुख्य आरोपी फरहान ने सब इंस्पेक्टर से रिवाल्वर छीनकर भागने का प्रयास किया। इस दौरान आरोपी ने एसआई और हेड कांस्टेबल से झूमाझटकी भी की। इस झूमाझटकी और उसे पकड़ने के प्रयास में एक फायर फरहान के पैर में लगा है।

दरअसल, आरोपी को गुरुवार की फार्मल गिरफ्तारी की गई थी। शुक्रवार को कोर्ट में रिमांड के लिए आवेदन किया गया। रिमांड मिलने के बाद पुलिस प्रकरण से जुड़े एक अन्य आरोपी अबरार की गिरफ्तारी के लिए आरोपी को बिल्किसगंज झागरिरया ले जा रही थी। इस दौरान रातीबड़ थाना क्षेत्र स्थित गांव सरवर जोड़ पर आरोपी फरहान ने लघुशंका करने की बात कही। सड़क पर गाड़ी खड़ी करने के बाद एसआई विजय भामरे और उनके साथ एक हेड कांस्टेबल फरहान को लघुशंका कराने के लिए सड़क किनारे ले जाने लगा। इसी बीच आरोपी ने एसआई विजय से पिस्टल लेकर हमला करने का प्रयास किया। इसी बीच विजय भामरे ने उससे पिस्टल छुड़ाने का प्रयास किया और फायर हो गया। फायर होने से गोली फरहान के पैर में पिंडली पर जाकर लगी थी।

हमीदिया अस्पताल में कराया भर्ती

देर रात पुलिस उसे हमीदिया अस्पताल लेकर पहुंची, वहां उसका इलाज चल रहा है। गोली लगने से उसे गंभीर चोट नहीं आई है। रातीबड़ पुलिस ने एसआई विजय भामरे की शिकायत पर आरोपी फरहान के खिलाफ पुलिस रिमांड के दौरान पिस्टल छीनने और जानलेवा हमला करने का प्रकरण दर्ज किया है।

आरोपी अली 6 मई तक रिमांड पर

यौन उत्पीड़न के इस मामले में गिरफ्तार आरोपी अली को अशोका गार्डन पुलिस ने शुक्रवार को कोर्ट में पेश किया ।वहां से अली को 6 मई तक की रिमांड पर लिया गया है। अली से पूछताछ और तथ्य जुटाने का प्रर्याप्त समय नहीं होने के कारण पुलिस ने कोर्ट से रिमांड मांगी थी। अशोका गार्डन में दर्ज हुए दोनों मामलों में फरहान और अली आरोपी है। इसमें से एक मामला सामुहिक दुष्कर्म से जुड़ा है।

साहिल की भी पुलिस ने मांगी रिमांड

अब तक की जांच में पुलिस को पता चला कि आरोपी साहिल अपनी डांस क्लास के माध्यम से आरोपियों से युवतियों को संपर्क करवाता था। इसके अलावा यह भी पता चला कि डांस क्लास में युवतियों को वह पब और रेस्टोरेंट में पार्टी के बहाने के भेजता था। आरोपी के मोबाइल में डांस क्लास की युवतियों के वीडियो भी मिले है। अब वीडियो के आधार पर पुलिस उन युवतियों से संपर्क करेगी। गुरुवार को पांचवीं पीड़िता के बयान दर्ज किए है। पीड़िता ने पुलिस को बताया है कि फरहान और अली ने उसके साथ एक ही कमरे में दुष्कर्म किया था और उसके वीडियो बनाए थे। खाने के बहाने उसे अशोका गार्डन बुलाया गया और फिर उसे गांजा भी पिलवाया गया। इसके बाद उसके साथ गैंगरेप किया।

सुसाइड नोट में आत्महत्या के लिए खुद को ठहराया जिम्मेदार

पत्नी, माता-पिता से विवाद के बाद युवक ने लगाई फांसी

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

गोविंदपुरा थाना क्षेत्र स्थित एन टू ई सेक्टर बरखेड़ा पठानी में एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उसके पास से सुसाइड नोट भी मिला है, जिसमें उसने आत्महत्या के लिए खुद को जिम्मेदार बताया है। सुसाइड नोट में किसी पर आरोप नहीं लगाए है। पुलिस ने लाश बरामद कर पीएम के बाद परिजन को सौंप दी है। पुलिस के अनुसार रोहित उर्फ सोनू पिता भारत नंदन खेरा (42) मकान नंबर 464, एनटू ई सेक्टर बरखेड़ा पठानी में रहता था। उसके साथ माता-पिता और पत्नी के अलावा दो बेटियां है। रोहित भेल सोसायटी में ठेका श्रमिक था और शराब पीने का आदी था। गत 18 अप्रैल को वह शराब के नशे में घर पहुंचा और जमकर हंगामा किया। उसके आए दिन के हंगामे और विवाद के कारण पिता बरखेड़ा पठानी में रहने वाले अपने साडूभाई के साथ चले गए। वे अपने साथ पत्नी और बहू समेत पोतियों को भी लेकर गए थे। पित भारत नंदन ने बताया कि बुधवार शाम रोहित साडूभाई के घर पहुंच गया। वहां से उनका मोबाइल लेकर घर लौट आया था। गुरुवार सुबह भारत नंदन अपने घर पहुंचे तो दरवाजा अंदर से बंद था। काफी आवाज देने के बाद भी दरवाजा अंदर से नहीं खुला तो भारत नंदन ने खिड़की से झांककर देखा। इस दौरान रोहित की लाश टीनशेड पर रस्सी के सहारे लटकी नजर आई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद लाश पीएम के लिए भेज दी। मौके से पुलिस को एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें रोहित ने अपनी मर्जी से आत्महत्या करने की बात लिखी है।

साले की शादी से लौटे बहनोई ने फांसी लगाई

भोपाल। कोलार थाना क्षेत्र स्थित मंदाकिनी कॉलोनी में इलेक्ट्रिशियन ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उसकी लाश परिजन ने शुक्रवार दोपहर फांसी के फंदे पर लटका देखा था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव बरामद कर पीएम के बाद परिजन को सौंप दिया है। सुसाइड नोट नहीं मिलने से आत्महत्या के कारण स्पष्ट नहीं हो सके हैं। पुलिस के अनुसार शंकर सार्थी पिता सुखदेव सार्थी (45) मंदाकिनी कॉलोनी में रहते थे और इलेक्ट्रिशियन का काम करते थे। सूर्या कॉलोनी में उनकी ससुराल है। गुरुवार को साले की शादी थी। वह शादी में शामिल होने परिवार के साथ गए थे। वहां से रात में लौट आए। शुक्रवार दोपहर उनकी पत्नी सूर्या कॉलोनी से अपने घर पहुंची तो घर का दरवाजा अंदर से बंद था। काफी देर तक आवाज देने के बाद भी दरवाजा नहीं खुला। इसके बाद किसी तरह दरवाजा तोड़ा गया तो शंकर की लाश फांसी के फंदे पर लटकी थी।

हमीदिया में चल रहा था दो महीने से इलाज

ट्रेन की चपेट में आए युवक की मौत, गवां चुका था एक पैर

भोपाल। गौतम नगर थाना क्षेत्र स्थित छोला नाका के पास एक युवक ट्रैन की चपेट में आ गया। यह घटना गत 4 फरवरी की बताई जा रही हे। ट्रेन की चपेट में आने से उसका एक पैर कट गया था। उसे एंबुलेंस की मदद से हमीदिया अस्पताल ले जाया गया था, वहां करीब दो महीने चले इलाज के बाद शुक्रवार सुबह उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव पीएम के बाद परिजन को सौंप दिया है। पुलिस के अनुसार रवि पिता गौरीशंकर (27) नवजीवन कॉलोनी छोला में रहता था। वह शराब पीने का आदी था। गत 4 फरवरी को छोला नाका के पास रेलवे ट्रैक पार कर रहा था, तभी ट्रेन की चपेट में आ गया। स्थानीय लोगों ने एंबुलेंस की मदद से उसे हमीदिया अस्साल में भर्ती करा दिया। वहां सर्जरी की गई। उसके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा था, लेकिन शुक्रवार सुबह उसकी तबीयत बिगड़ी और मौत हो गई। डॉक्टर का कहना है कि ट्रेन से पैर कटने के कारण पैर में संक्रमण हो गया था। संक्रमण बढ़ने के कारण उसकी मौत हो गई।

भोपाल के जहांगीराबाद बरखेड़ी में कचरे की समस्या का यह आलम है। इसके कारण रहवासी हो रहे हैं परेशान

मेट्रो एंकर | 20 दिवसीय समर कैम्प

सरकारी स्कूलों में रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने समर कैम्प शुरू

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी इन दिनों कला एवं अभिव्यक्ति, नाट्य अभिनय, फोटोग्राफी, प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग, पारंपरिक नृत्य, क्षेत्रीय संगीत, हस्तकला, टेक्नोलॉजी सहित कविता और कहानियों की रचना जैसी अपनी अभिरूचियों के विकास में व्यस्त हैं। दरअसल, प्रदेश के विभिन्न शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए समर कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय के अपर संचालक राजीव तोमर ने बताया कि एक मई से प्रारंभ हुए ये समर कैम्प 20 मई 2025 तक संचालित होंगे। सरकारी स्कूलों में अकादमिक गतिविधियों के साथ विद्यार्थियों में रचनात्मक-सृजनशीलता, कला-कौशल के विकास के लिए इन समर कैम्प्स का आयोजन प्रदेश के समस्त सांदीपनी विद्यालयों, पीएमश्री विद्यालयों, उत्कृष्ट विद्यालयों और मॉडल विद्यालयों के साथ 500 से अधिक नामांकन वाले एकीकृत हायर सेकेंडरी विद्यालयों में किया जा रहा है। समर कैम्प का उद्देश्य विद्यार्थियों में 21वीं सदी के विभिन्न कौशलों जैसे आपसी सहयोग, टीमवर्क, समस्या समाधान, आपसी सामंजस्य, तार्किकता और नेतृत्व जैसे जीवन कौशल विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करने के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक जागरूकता, डिजिटल और वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना तथा विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा बोलने की क्षमता का विकास आदि हैं।

फाईल फोटो

जून में प्रथम चरण की परीक्षा लेगा मुक्त स्कूल बोर्ड

मप्र राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड इस वर्ष जून माह में प्रथम चरण की परीक्षा आयोजित करने जा रहा है। माध्यमिक शिक्षा मंडल के अनुत्तीर्ण छात्रों के लिये रुक जाना नहीं योजना में कक्षा 10वीं और 12वीं के साथ आ लौट चलें कक्षा 10वीं, 12वीं, ओपन स्कूल परंपरागत परीक्षा 5वीं, 8वीं, 10वीं एवं 12वीं, आईटीआई समकक्ष कक्षा 12वीं, सीबीएसई ऑन डिमांड कक्षा 12वीं की परीक्षा 2 जून 2025 से 2 पारियों में की जा रही हैं। प्रथम पारी में समस्त 12वीं कक्षा की परीक्षा तथा द्वितीय पारी में समस्त 10वीं, 8वीं और 5वीं की परीक्षा आयोजित की जा रही हैं। परीक्षा की समय-सारणी मप्र राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड के पोर्टल पर उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए ई-मेल या मोबाईल ऐप और फोन नम्बर- 0755-2552106 से भी प्राप्त की जा सकती है।

महिला ने जहरीला पदार्थ पीकर की खुदकुशी

भोपाल। बैरसिया इलाके में रहने वाली एक महिला ने जहरीला पदार्थ पीकर खुदकुशी कर ली। अस्पताल से मिली सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पीएम के लिए भेज दिया है। परिजनों के बयान के बाद ही जहर खाने के कारणों का खुलासा होने की उम्मीद है। जानकारी के अनुसार निकिता जाट पत्नी संदीप जाट (25) ग्राम खजूरी में रहती थी और गृहणी थी। शुक्रवार की निकिता ने कोई कीटनाशक पी लिया था। तबीयत बिगडऩे पर परिजन उसे इलाज के लिए पास के अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां से उसे भोपाल के लिए रैफर कर दिया गया। उसके बाद घरवालों ने निकिता को भोपाल स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां शनिवार तड़के उसने दम तोड़ दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। परिजनों के बयान के बाद ही जहरीला पदार्थ खाने के कारणों का खुलासा हो सकेगा।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक **राजेश सिरोठिया** द्वारा पी जी इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड,करोंद-भानपुर बाइपास विलेज रासलाखेड़ी भोपाल से मुद्रित तथा ए-182 मनीषा मार्केट शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। **प्रधान संपादक राजेश सिरोठिया संपादक आशीष दुबे*** आर एन आई पंजीयन क्रमांक एमपी एचआईएन/2016/68849 (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार) **फोन :** 0755-4917524, 2972022